मङ्गलम्

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥ 1॥

अन्वयः—यस्यां (भूमौ) समुद्रः, उत सिन्धुः आपः (सन्ति), यस्यां (भूमौ) अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः। यस्यां (भूमौ) इदं जिन्वति प्राणदेजत्, सा भूमिः नः पूर्वपेये दधातु॥1॥

शब्दार्थाः—यस्याम् = जिसमें (जिस भूमि पर), समुद्रः = महासागर, सिन्धुः = सिन्धु नदी (नदियाँ), आपः = जलाशय (जल), यस्याम् अन्नम् = जिसमें अनेक प्रकार के भोज्यपदार्थ (अन्न) उपजते हैं, कृष्टयः = कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग, सं बभूवुः = संगठित होकर रहते हैं, इदं जिन्वति = ये साँस लेते हैं (जीते हैं), प्राणदेजत् = प्राणी चलते-फिरते हैं, सा भूमिः = वह मातृ-भूमि, नः = हमें, पूर्व = प्रथम/पहले, पेये = भोज्यपदार्थ (खाद्य-पदार्थ), दधातु = प्रदान करे।

हिन्दी-अनुवाद—जिसमें (जिस भूमि पर) महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के अन्न उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, जिस (भूमि) पर ये साँस लेते हैं (जीते हैं), प्राणी चलते-फिरते हैं, वह मातृ-भूमि हमें प्रथम भोज्यपदार्थ (खाद्य-पदार्थ) प्रदान करे।

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥ 2॥

अन्वयः—यस्याः पृथिव्याः चतस्रः प्रदिशः, यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः। या बहुधा प्राणदेजत् बिभर्ति, सा भूमिः नः गोषु अपि अन्ने दधातु ।।2।।

शब्दार्थाः—यस्याः पृथिव्याः = जिस पृथ्वी की, चतस्रः = चार दिशायें, प्रदिशः = उपदिशायें, यस्याम् अन्नम् = जिसमें अनेक प्रकार के भोज्यपदार्थ (फल, शाक आदि) उपजते हैं, कृष्टयः = कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग, सं बभूवुः = संगठित होकर रहते हैं, या = जो (भूमि), बहुधा = अनेक प्रकार के, प्राणदेजत् = प्राणियों को (साँस लेने वाले तथा चलने-फिरने वाले जीवों को), बिभर्ति = धारण करती है/ भरण-पोषण करती है, सा भूमिः = वह मातृ-भूमि, नः = हमें, गोषु = गायों में, अपि = भी, अन्ने = अन्नों में (खाद्य पदार्थों में), दधातु = सम्पन्न बना दे।

हिन्दी-अनुवाद—जिस भूमि की चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्यपदार्थ (फल, शाक आदि) उपजते हैं, जहाँ कृषि-कार्य करने वाले लोग सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वाले तथा चलने-फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृ-भूमि हमें गाय आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य-पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥ 3॥

अन्वयः—बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं जनं यथा औकसं बिभ्रती ध्रुवा (इव) अनपस्फुरन्ती धेनुः इव पृथिवी मे द्रविणस्य सहस्रं धारा दुहाम् ।।3।।

शब्दार्थाः— बहुधा = अनेक प्रकार से/विभिन्न, विवाचसम् = भाषाओं को बोलने वाले, नाना- धर्माणम् = अनेक धर्मों को मानने वाले, जनम् = जन-समुदाय को, यथा औकसम् = एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, बिभ्रती = धारण करती है, सहस्रं धारा द्रविणस्य = धन की सहस्रों धाराओं का , मे = हमारे लिए, दुहाम् = दोहन करे, धेनुः इव = गाय के समान, ध्रुवा (इव) = सदैव रहने वाली (के समान), अनपस्फुरन्ती = कभी नष्ट न होने वाली।

हिन्दी-अनुवाद—अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वालों तथा अनेक धर्मों को मानने वालों को एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली स्थिर-जैसी यह पृथ्वी हमें धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो।

1 भारतीवसन्तगीतिः

पाठ-परिचय—'भारतीवसन्तगीतिः' प्रख्यात कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीत-संग्रह से लिया गया है। इसमें कवि ने अपने देश और मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता तथा कल्याण की कामना वाणी (सरस्वती) से की है। प्रार्थना करता हुआ कवि कहता है कि हे सरस्वती! ऐसी नवीन वीणा बजाओ जिससे वसन्त ऋतु में मधुर मञ्जरियों से पीली पंक्ति वाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भौंरों का गुंजन और यमुना आदि नदियों का जल अत्यन्त मनमोहक हो जाये तथा तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन हिलने लगें अर्थात् ऐसी नवीन ओजस्विनी वीणा बजाओ जिससे सृष्टि में नवीन चेतना का संचार हो। इस गीत में कवि का देशानुराग देखने को मिलता है। स्वतन्त्रता-संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखा गया यह गीत एक ऐसे वीणा स्वर की कल्पना करता है, जो नवीन चेतना का आह्वान करने के साथ स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जनसामान्य को प्रेरित करे। अतः यह गीत ओज और माधुर्य गुणों से परिपूर्ण एक पवित्र राग है।

मूलपाठः, अन्वयः, शब्दार्थाः, हिन्दी-अनुवादः, संस्कृत व्याख्याः अवबोधनकार्यम् च

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥1॥ निनादय............।।

अन्वयः—अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललितनीतिलीनां गीतिं मृदुं गाय। इह वसन्ते मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः सरसाः लसन्ती। ललित कोकिला काकलीनां कलापाः। नवीनां वीणां निनादय।

शब्दार्थाः— निनादय = नितरां वादय (बजाओ), नवीनाम् = नूतनां (नवीन), अये = भो (अरे), वाणि = सरस्वति (हे सरस्वती), वीणाम् = वल्लकीं (वीणा को), मृदुम् = मधुरं (कोमल), गाय = स्तुहि (गाओ), गीतिम् = गानं (गीत), ललितनीतिलीनाम्= सुन्दरनीतिसंलग्नाम् (सुन्दर नीति में लीन), मधुर = चारु (सुन्दर), मञ्जरी = आम्रकुसुम (आम के पुष्प/बौर), पिञ्जरी-भूत-मालाः = पीतपङ्क्तयः (पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ), वसन्ते = वसन्तकाले (वसन्त ऋतु में), लसन्ति = शोभन्ते (सुशोभित हो रही हैं), इह = अत्र (यहाँ), सरसा = रसपूर्णाः (रस से पूर्ण), रसालाः = आम्राः = (आम के पेड़) कलापाः = समूहाः (समूह), ललित-कोकिला = मनोहरः पिकः (मनमोहक कोयल), काकली = कोकिलानां ध्वनिः (कोयल की आवाज) अये वाणि! = भो माता सरस्वति! (हे माँ सरस्वती), नवीनाम् = नूतनां (नवीन), वीणाम् = वल्लकीं (वीणा को), निनादय = नितरां वादय (बजाओ)।

हिन्दी अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गीतांश में कवि ने माँ सरस्वती से वसन्त ऋतु में प्रकृति में नवीन चेतना का संचार करने वाली ओजस्विनी वीणा को बजाने की प्रार्थना की है।

प्रसंग—हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ। सुन्दर नीतियों से पूर्ण गीत का मधुर गान करो। इस वसन्त ऋतु में मधुर आम्रपुष्प (बौरों) के कारण पीले वर्ण से युक्त सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं। मनमोहक कोयल की कूक तथा कोयलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।

हिन्दी-अनुवाद—हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ। सुन्दर नीतियों से पूर्ण गीत का मधुर गान करो। इस वसन्त ऋतु में मधुर आम्रपुष्प (बौरों) के कारण पीले वर्ण से युक्त सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं। मनमोहक कोयल की कूक तथा कोयलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।

संस्कृत व्याख्या:

सन्दर्भः—प्रस्तुतो गीतांशोऽस्माकं 'शेमुषी' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'भारतीवसन्तगीतिः' इति पाठात् उद्धृतः। य आधुनिक संस्कृत-साहित्ये प्रख्यातस्य कवेः पं. जानकीवल्लभशास्त्रिणः 'काकली' इति गीत संग्रहात् सङ्कलितः। (प्रस्तुत गीतांश हमारी शेमुषी पाठ्यपुस्तक के 'भारतीवसन्तगीतिः' पाठ से लिया गया है, जो आधुनिक संस्कृत-साहित्य में प्रसिद्ध कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के 'काकली' गीत-संग्रह से संकलित है।)

प्रसंगः—प्रस्तुत गीतांशे कविना माता सरस्वती वसन्तकाले प्रकृतौ नवचेतना सञ्चारिकाम् ओजस्विनीं वीणां वादितुं निवेदिता। (प्रस्तुत गीतांश में कवि द्वारा सरस्वती माँ वसन्त काल में प्रकृति में नई चेतना का सञ्चार करने वाली ओजस्वमयी वीणा को बजाने के लिए निवेदन किया जा रहा है।)

व्याख्याः—हे सरस्वति! त्वं नूतनां वल्लकी वादय। रम्यनयस्य मधुरं गीतं गाय। अस्मिन् वसन्त काले मृदुपुष्पैः पीतवर्णानाम् आम्रवृक्षाणां पङ्क्तयः शोभन्ते। मनमोहकानां पिकानां तेषां केकानां च समूहः शोभन्ते! हे सरस्वति! नूतनां वल्लकीं वादय। (हे सरस्वती! तुम नई वीणा को बजाओ! सुन्दर नीति का मधुर गीत गाओ। इस वसन्त काल में कोमल बौर (मंजरी) से युक्त आम के वृक्ष शोभा दे रहे हैं। मनोहर कोयल और उसकी कूक का समूह शोभा दे रहे हैं। हे सरस्वती! नई वीणा बजाओ।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) सरस्वती कीदृशीं वीणां निनादयतु? (सरस्वती कैसी वीणा बजाये?)

(ख) वसन्ते कासां कलापाः भवन्ति? (वसन्त में किनका कलरव होता है?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) कीदृशीं गीतिं गायतु? (कैसा गीत गाये?)

(ख) वसन्ते काः सरसाः लसन्ति? (वसन्त में क्या सरस शोभा देती है?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'वादय' इति पदस्य पर्यायपदं गीतांशात् चुनत। ('वादय' पद का पर्याय पद गीतांश से छाँटकर लिखो।)

(ख) 'नीरस' पदस्य विलोमपदं गीतांशात् चित्वा लिखत। ('नीरस' पद का विलोम-पद गीतांश में से चुनकर लिखिए।)

उत्तराणि—(1) (क) नवीनाम् (नई)। (ख) कोकिला काकलीनाम् (कोयलों की केका ध्वनि)।

(2) (क) ललितनीतिलीनां मृदुगीतिं गायतु। (सुन्दर नीति से युक्त मृदु गीत गायें।)

(ख) वसन्ते मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः सरसाः लसन्ति। (वसन्त में मधुर पीले रंग की मंजरी सरस शोभा देती हैं।)

(3) (क) निनादय। (ख) सरस।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ॥2॥ निनादय............।।

अन्वयः—कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति। मधुमाधवीनाम् नतां पंक्तिम् आलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

शब्दार्थाः— वहति = चलति (चलती है, बहती है), मन्दमन्दम् = शनैः-शनैः (धीरे-धीरे), सनीरे = सजले (जल से पूर्ण), समीरे = पवने (हवा में), कलिन्दात्मजायाः = यमुनायाः (यमुना नदी के), सवानीरतीरे = वेतसयुक्ते तटे (बेंत की लता से युक्त तट पर), नताम् = नतिप्राप्ताम् (झुकी हुई), पङ्क्तिम् = श्रेणिम् (पंक्ति को), अवलोक्य = वीक्ष्य (देखकर), मधुमाधवीनाम् = मधुमाधवीलतानाम् (मधुर मालती लताओं को), अये वाणि = ओ माँ सरस्वति! (हे माँ सरस्वती), नवीनाम् = नूतनां (नवीन), वीणाम् = वल्लकीं (वीणा को), निनादय = नितरां वादय (बजाओ)।

हिन्दी अनुवाद:

सन्दर्भ–प्रस्तुत गीतांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीतसंग्रह से संकलित है।

प्रसंग–प्रस्तुत गीतांश में कवि ने सरस्वती से यमुना के तट पर झुकी हुई मधुर मालती की लताओं को देखकर नवीन वीणा को बजाने की प्रार्थना की है।

हिन्दी-अनुवाद–यमुना नदी के बेंत की लताओं से युक्त तट पर जल से पूर्ण वायु धीरे-धीरे बहती है। (उस हवा से) मधुर मालती की लता-पंक्ति को झुकी हुई देखकर हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।

संस्कृत व्याख्या:

सन्दर्भः–प्रस्तुतो गीतांशोऽस्माकं 'शेमुषी' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'भारतीवसन्तगीतिः' इति पाठात् उद्धृतः। य आधुनिक संस्कृत-साहित्ये प्रख्यातस्य कवेः जानकीवल्लभशास्त्रिणः 'काकली' इति गीतसंग्रहात् संकलितः। (प्रस्तुत गीतांश हमारी 'शेमुषी' पाठ्यपुस्तक के 'भारतीवसन्तगीतिः' पाठ से लिया गया है। यह आधुनिक संस्कृत-साहित्ये में प्रसिद्ध कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के 'काकली' गीत संग्रह से संकलित है।)

प्रसङ्गः–प्रस्तुतगीतांशे कविः यमुनातटे अवनताः मृदु मालती लताः अवलोकस्य नूतनां वल्लवीं वादनाय प्रार्थयति। (प्रस्तुत गीतांश में कवि यमुना के तट पर झुकी कोमल मालती लताओं का अवलोकन कर नई वीणा बजाने के लिए प्रार्थना करता है।)

व्याख्याः–नेत्र लताभिः युक्ते यमुना तटे जलसंयुता पवनः शनैः-शनैः वहति। तेन पवनेन मृदुमालतीलतानां पङ्क्तयोऽवनताः सन्ति। तान् अवलोक्य हे सरस्वति! त्वं नूतनां वीणाम् वल्लकीं वा वादय। (बेंत की लताओं से युक्त यमुना के किनारे पर जल से युक्त वायु मन्द-मन्द चल रही है। उस पवन से कोमल मालती लताओं की पंक्तियाँ झुकी हुई हैं। उन्हें देखकर हे सरस्वती! तुम नई वीणा को बजाओ।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत– (एक शब्द में उत्तर दीजिए–)

(क) समीरः कथं वहति? (हवा कैसे चलती है?)

(ख) यमुना कस्याः आत्मजा? (यमुना किसकी बेटी है?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत– (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए–)

(क) यमुना तीरे वायुः कथं वहति? (यमुना-किनारे वायु कैसी चलती है?)

(ख) सरस्वती किमालोक्य वीणां निनादयतु? (सरस्वती क्या देखकर वीणा बजाये?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत–(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए–)

(क) 'सनीरे समीरे' इति पदयोः किं विशेषण पदम्? ('सनीरे-समीरे' में कौनसा विशेषण है?)

(ख) गीतांशे 'वहति' क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत। (गीतांश में 'वहति' क्रियापद का कर्त्ता लिखिए।)

उत्तराणि–(1) (क) मन्दंमन्दम्। (धीरे-धीरे)। (ख) कलिन्दस्य (सूर्य की)।

(2) (क) यमुना तीरे सनीरे समीरे मन्दं-मन्दं वहति। (यमुना के किनारे पानी से युक्त वायु धीरे-धीरे चलती है।)

(ख) मधुरमाधवीनां पंक्तिमालोक्य वीणां निनादयतु सरस्वती। (मधुरमाधवी की पंक्तियों को देखकर सरस्वती वीणा बजाये।)

(3) (क) 'सनीरे', इति विशेषणपदम्। (ख) 'वायुः' वहति क्रियाया कर्त्ता।

ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ॥3॥ निनादय............।।

अन्वयः–ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय-मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

शब्दार्थाः— ललित = मनोहर (सुन्दर, मन को आकर्षित करने वाले), पल्लवे = पत्राणि (पत्तों वाले), पादपे = तरौ (वृक्षों पर), पुष्पपुञ्जे = पुष्पसमूहे (पुष्पों के समूह पर), मलयमारुतोच्चुम्बिते = मलयानिलसंस्पृष्टे (चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गये), मञ्जुकुञ्जे = शोभनलतावितानें (सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान/सुन्दर कुञ्जों पर), स्वनन्तीम् = ध्वनिं कुर्वन्तीम् (ध्वनि करती हुई), ततिम् = पंक्तिम् (समूह को), प्रेक्ष्य = दृष्ट्वा (देखकर), मलिनाम् = कृष्णवर्णाम् (मलिन), अलीनाम् = भ्रमराणाम् (भ्रमरों की)।

हिन्दी अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गीतांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि पं. जानकीवल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीतसंग्रह से संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गीतांश में कवि ने सरस्वती से मनमोहक कुञ्जों में काले भौंरों की पंक्ति को देखकर नवीन वीणा को बजाने की प्रार्थना की है।

हिन्दी-अनुवाद—चन्दन-वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गए, मन को आकर्षित करने वाले पत्तों से युक्त वृक्षों पर, पुष्पों के समूह पर तथा सुन्दर कुञ्जों पर भौंरों की ध्वनि करती हुई पंक्ति समूह को देखकर हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।

संस्कृत व्याख्याः

सन्दर्भः—प्रस्तुतोऽयं गीतांशोऽस्माकं 'शेमुषी' इति पाठ्य-पुस्तकस्य 'भारतीवसन्तगीतिः' इति पाठात् उद्धृतः।' पाठोऽयमाधुनिक-संस्कृत साहित्यस्य प्रख्यातकवेः पं. जानकी वल्लभ शास्त्रिणः 'काकली' इति गीति संग्रहात् सङ्कलितः। (प्रस्तुत गीतांश हमारी शेमुषी पाठ्य-पुस्तक के 'भारतीवसन्तगीतिः' पाठ से उद्धृत है। यह पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के काकली गीत-संग्रह से संकलित है।)

प्रसङ्गः—गीतांशेऽस्मिन् कविः देवी सरस्वतीं मनमोहकेषु कुञ्जेषु भ्रमराणां श्यामपंक्तिमवलोक्य नूतनां वल्लकी वादयितुं निवेदयति। (इस गीतांश में कवि देवी सरस्वती को मनमोहक कुंजों में भ्रमरों की श्याम पंक्ति को देखकर नई वीणा बजाने के लिए निवेदन करती है।)

व्याख्याः—चन्दन-वृक्षाणां सुरभित-पवनेन स्पृष्टैः मनमोहकैः पत्रैः संयुतेषु वृक्षेषु, पुष्पस्तवकेषु, रम्य कुंजेषु गुञ्जनरतानां मधुकराणां पंक्ति-सम्मर्द चावलोक्य देवि सरस्वति! नूतनां वल्लकीं वादय। (चन्दन के वृक्षों की सुगन्धित पवन से छुई हुई, मनमोहक पत्तों से युक्त वृक्षों पर फूलों के गुच्छों पर सुन्दर कुंजों पर गुंजन करने में रत भौंरों की पंक्तियों के समूह को देख हे देवी सरस्वती! तुम नई वीणा को बजाओ।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) अलीनां पंक्तिः केन स्पृष्टा वहति? (भौंरों की पंक्ति किससे स्पर्श कर बहती हैं?)

(ख) केषां पंक्तिमवलोक्य सरस्वती वीणां निनादयतु? (किनकी पंक्ति को देखकर सरस्वती वीणा बजाये?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) अलीनां पंक्तिः किं कुर्वन्ती अवलोक्य सरस्वती वीणां निनादयतु? (क्या करती हुई भौंरों की पंक्ति को देखकर सरस्वती वीणा बजाये?)

(ख) मलिनामलीनां पंक्ति कुत्र स्वनति? (मलिन भौंरों की पंक्ति कहाँ स्वर करती है?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'ललितपल्लवे पादपे' इत्यत्र 'पादपे' इति पदस्य विशेषण पदं लिखत। ('ललितपल्लव पादपे' में 'पादपे' पद का विशेषण लिखिए।)

(ख) 'निर्मलाम्' इति पदस्य विलोमार्थक पदं गीतांशात् चित्वा लिखत। ('निर्मलाम्' पद का विलोमपद गीतांश से चुन कर लिखिए।)

उत्तराणि—(1) (क) मलयमरुतेन। (मलयानिल से)। (ख) मलिनामलीनाम्। (मलिन भौंरों की)।

(2) (क) मलिनामलीनां पंक्तिं स्वनन्तीम् अवलोक्य वीणां निनादयतु। (गुंजन करती मलिन भौंरों की पंक्ति को देखकर सरस्वती वीणा बजाये।)

(ख) मलिनामलीनां पंक्ति मञ्जुकुंजे स्वनति। (मलिन भौंरों की पंक्ति सुन्दर कुञ्ज पर स्वर करती है।)

(3) (क) 'ललितपल्लवे' इति पदं पादपे पदस्य विशेषणपदम्। ('ललितपल्लवे' पद 'पादपे' का विशेषण है।)

(ख) मलिनाम्। (कृष्ण वर्ण/मैली)।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ॥4॥ निनादय.... ॥

अन्वयः—तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलम् शुमं चलेत्। नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

शब्दार्थाः— लतानाम् = वल्लरीनां (लताओं के/बेलों के), नितान्तम् = अमितं (अत्यधिक), सुमम् = कुसुमम् (पुष्प को), शान्तिशीलम् = शान्तियुक्तम् (शान्ति से युक्त), चलेत् = गच्छेत् (चलायमान हो जाएँ), उच्छलेत् = ऊर्ध्वं गच्छेत् (उच्छलित हो उठे/ उछल पड़े), कान्तसलिलम् = मनोहरजलम् (सुन्दर जल), सलीलम् = क्रीडासहितम् (खेल-खेल के साथ), तव = ते (तुम्हारी), आकर्ण्य = निशम्य/श्रुत्वा (सुनकर), वीणाम् = वल्लकीं (वीणा को), अदीनाम् = तेजस्विनीं (ओजस्वी), नदीनाम् = सरिताम् (नदियों का)।

हिन्दी अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गीतांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि पं. जानकीवल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीतसंग्रह से संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गीतांश में कवि ने सरस्वती से प्रकृति में नवीन प्राण फूँक देने वाली ओजस्विनी वीणा को बजाने की प्रार्थना की है।

हिन्दी-अनुवाद—तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के अत्यधिक शान्ति से युक्त पुष्प चलायमान हो जाएँ। नदियों का सुन्दर जल खेल-खेल में उछल पड़े। हे वाणी (सरस्वती)! (ऐसी ओजस्विनी) नवीन वीणा को बजाओ।

संस्कृत व्याख्याः

सन्दर्भः—गीतांशोऽयमस्माकं 'शेमुषी' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'भारतीवसन्तगीतिः' इति पाठात् उद्धृत। पाठोऽयमाधुनिक संस्कृत-साहित्यस्य प्रख्यातकवेः पं. जानकी वल्लभ शास्त्रिणः 'काकली' इति गीतसंग्रहात् सङ्कलितः। (यह गीतांश हमारी 'शेमुषी' पाठ्य-पुस्तक के 'भारतीवसन्तगीतिः' पाठ से लिया गया है। यह पाठ आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के काकली गीत-संग्रह से सङ्कलित है।)

प्रसङ्गः—प्रस्तुत गीतांशे कविः प्रकृतौ नव प्राण सम्प्रेषणाय देवीं सरस्वतीं प्रति प्रार्थयति। (प्रस्तुत गीतांश में कवि प्रकृति में नये प्राण भरने के लिए देवी सरस्वती से प्रार्थना करता है।)

व्याख्याः—हे सरस्वति! तव ओजस्विनीं वल्लकीं श्रुत्वा लतानामपि शान्त पुष्पाणि चलायमानानि भवन्तु (गतिशीलाः भवन्तु) नदीनां स्वच्छं जलं क्रीडायामेव उच्चलतु। हे देवि सरस्वति! एवमोजस्विनीं वल्लकीं वादय। (हे सरस्वती! तुम्हारी ओजपूर्ण वीणा को सुनकर लताओं के भी शान्त पुष्प चलायमान (गतिशील) हो जायें। नदियों का स्वच्छ जल खेल ही खेल में उछल पड़े। हे देवी सरस्वती! ऐसी ओजपूर्ण वीणा बजाओ।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) सरस्वत्याः वीणा कीदृशी अस्ति? (सरस्वती की वीणा कैसी है?)

(ख) कासां जलम् उच्छलति? (किनका जल उछलता है?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) किमाकर्ण्य लता चलति? (क्या सुनकर लता चलायमान होती है?)

(ख) नदीनां स्वच्छं जलं कथम् उच्छलति? (नदियों का स्वच्छ जल कैसे उछलता है?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'नितान्तं शान्तिशीलं सुमम्' विशेष्य पदं किम्? (विशेष्य पद क्या है?)

(ख) 'उच्छलेत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं गीतांशात् लिखत। ('उच्छलेत्' क्रियापद का कर्त्ता गीतांश से लिखिए।)

उत्तराणि—(1) (क) अदीना। (ओजपूर्ण)। (ख) नदीनाम् (नदियों का)।

(2) (क) सरस्वत्याः अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लताः चलन्ति। (सरस्वती की ओजपूर्ण वीणा को सुनकर लताएँ चलायमान हो जाती हैं।)

(ख) सरस्वत्याः अदीनां वीणां श्रुत्वा नदीनां जलं सलीलम् उच्छलति। (सरस्वती की ओजस्वी वीणा को सुनकर नदियों का जल उछलता है।)

(3) (क) सुमम् (पुष्प)। (ख) 'जलम्' उच्छलेत् क्रियापदस्य कर्तृपदम्।

पाठ्य-पुस्तकस्य प्रश्नोत्तराणि

1. एकपदेन उत्तरं लिखत—(एक शब्द में उत्तर दीजिये—)

(क) कविः कां सम्बोधयति? (कवि किसको संबोधित करता है?)

उत्तरम्—वाणीम् (वाणी को)।

(ख) कविः वाणीं कां वादयितुं प्रार्थयति? (कवि वाणी से क्या बजाने की प्रार्थना करता है?)

उत्तरम्—वीणाम्। (वीणा को)

(ग) कीदृशीं वीणां निनादयितुं प्रार्थयति? (कैसी वीणा बजाने की प्रार्थना करता है?)

उत्तरम्—नवीनाम् (नई वीणा को)।

(घ) गीतिं कथं गातुं कथयति? (कैसा गीत गाने के लिए कहता है?)

उत्तरम्—नीतिलीनाम् (नीति से पूर्ण)।

(ङ) सरसाः रसालाः कदा लसन्ति? (रसीले आम कब शोभा देते हैं?)

उत्तरम्—वसन्ते (वसन्तु ऋतु में)।

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत—(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिये—)

(क) कविः वाणीं किं कथयति? (कवि वाणी को क्या कहता है?)

उत्तरम्—कविः वाणीं नवीनां वीणां निनादयितुं कथयति। (कवि वाणी को नई वीणा बजाने के लिए कहता है।)

(ख) वसन्ते किं भवति? (वसन्त ऋतु में क्या होता है?)

उत्तरम्—वसन्ते मधुर-मञ्जरी-भूतमालाः सरसाः-रसालाः लसन्ति। (वसन्त में मधुर मंजरियों से पीले वर्ण से युक्त रसीले आमों के वृक्ष शोभा देते हैं।)

(ग) सलिलं तव वीणामाकर्ण्य कथम् उच्चलेत्? (पानी तुम्हारी वीणा को सुनकर कैसे उछलता है?)

उत्तरम्—तव वीणामाकर्ण्य सलीलं जलमुच्चलेत्। (तुम्हारी वीणा को सुनकर पानी खेल ही खेल में उछलता है।)

(घ) कविः भगवतीं भारतीं कस्याः तीरे मधुमाधवीनां नतां पंक्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति?

(कवि भगवती भारती (सरस्वती) से किस नदी के तट पर (कहाँ) मधुमाधवी की झुकी हुई पंक्तियों को देखकर वीणा को बजाने के लिए कहता है?)

उत्तरम्—कविः भगवतीं भारतीं कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे मधुमाधवीनां नतां पंक्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति। (कवि भगवती भारती (सरस्वती) से यमुना नदी के बेंत की लताओं से युक्त तट पर मधुर मालती की झुकी हुई पंक्तियों को देखकर वीणा बजाने के लिए कहता है।)

3. 'क' स्तम्भे पदानि 'ख' स्तम्भे तेषां पर्यायपदानि दत्तानि। तानि चित्वा पदानां समक्षे लिखत—

('क' स्तम्भ के पदों के पर्यायपद 'ख' स्तम्भ में दिये गये हैं, उनमें से सही पद चुनकर उनके समक्ष लिखिए—)

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) सरस्वती	(1) तीरे
(ख) आम्रम्	(2) अलीनाम्
(ग) पवनः	(3) समीरः
(घ) तटे	(4) वाणी
(ङ) भ्रमराणाम्	(5) रसालः

उत्तरम्—

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) सरस्वती	वाणी
(ख) आम्रम्	रसालः
(ग) पवनः	समीरः
(घ) तटे	तीरे
(ङ) भ्रमराणाम्	अलीनाम्

4. अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतभाषया वाक्यरचनां कुरुत—

(निम्नलिखित पदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत-भाषा में वाक्य-रचना कीजिए)—

(क) निनादय (ख) मन्दमन्दम् (ग) मारुतः (घ) सलिलम् (ङ) सुमनः

उत्तरम्—वाक्यरचना—

(क) निनादय— अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।
(हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।)

(ख) मन्दमन्दम्— कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे समीरः मन्दमन्दं वहति।
(यमुना नदी के बेंत की लताओं से युक्त तट पर हवा धीरे-धीरे चलती है।)

(ग) मारुतः— सायंकाले मारुतः मन्दं-मन्दं वहति। (सायंकाल हवा धीरे-धीरे चलती है।)

(घ) सलिलम्— अये वाणि! तव नवीनां वीणाम् आकर्ण्य नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्।
(हे सरस्वती! तुम्हारी नवीन वीणा को सुनकर नदियों का सुन्दर जल खेल-खेल में उछल पड़े।)

(ङ) सुमनः— पुष्पस्य पर्यायं सुमनः अस्ति। (पुष्प का पर्यायवाची सुमन है।)

5. प्रथमश्लोकस्य आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।

(प्रथम श्लोक का आशय हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में लिखिए।)

उत्तरम्— प्रथम श्लोक का आशय—हे माँ वाणी (सरस्वती)! आप अपनी वीणा से ऐसे सुन्दर नीतियों से युक्त गीत का मधुर गान करो, जिसे सुनकर समस्त चराचर में सौन्दर्य के प्रति चेतना जाग्रत हो जाए। प्राणी नीति के मार्ग पर अग्रसर हों।

हे माता सरस्वती! वसन्त ऋतु आ गई है। आम के वृक्ष बौरा गए हैं। अमराइयाँ पीली कान्ति से युक्त हो गई हैं। उन आम्र-वृक्षों पर कूकती कोयलों के समूह मनमोहक लगते हैं। फिर भी परतन्त्र भारतीयों के मनों में उत्साह नहीं है। हे माँ सरस्वती! आप ऐसी वीणा बजाइये, जिससे सभी भारतीयों के मनों में उत्साह भर जाये और वे भारत-माता की स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त करें।

6. अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत—(निम्नलिखित पदों के विलोमपद लिखिए।)

(क) कठोरम्	....	(घ) प्राचीनम्	....
(ख) कटु	....	(ङ) नीरसः	....
(ग) शीघ्रम्	....		

उत्तरम्—

पदानि	विलोमपदानि	पदानि	विलोमपदानि
(क) कठोरम्	कोमलम्	(घ) प्राचीनम्	नवीनम्
(ख) कटु	मृदु	(ङ) नीरसः	सरसः
(ग) शीघ्रम्	विलम्बम्		

अन्यमहत्त्वपूर्णप्रश्नोत्तराणि

प्रश्नः 1. वाणी किं निनादय? (सरस्वती क्या बजाये?)
उत्तरम्—वाणी नवीनां वीणां निनादय। (सरस्वती नवीनता से युक्त वीणा को बजाये।)
प्रश्नः 2. वसन्ते के लसन्ति? (वसन्त में क्या सुशोभित होते हैं?)
उत्तरम्—वसन्ते मधुरमञ्जरी-पिञ्जरी-भूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति।
(वसन्त में मधुर मञ्जरियों से पीली हुई सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित होती हैं।)
प्रश्नः 3. मन्दमन्दं कः वहति? (धीरे-धीरे क्या बहता है?)
उत्तरम्—सनीरः समीरः मन्दमन्दं वहति। (जल से युक्त पवन धीरे-धीरे बहता है।)
प्रश्नः 4. सवानीरतीरः कस्याः अस्ति? (बेंत की लताओं से आच्छादित तट किसका है?)
उत्तरम्—कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरः अस्ति। (यमुना का तट बेंत की लताओं से आच्छादित है।)
प्रश्नः 5. पादपाः कैः युक्ताः? (वृक्ष किनसे युक्त हैं?)
उत्तरम्—पादपाः ललितपल्लवैः युक्ताः सन्ति। (वृक्ष मन को आकर्षित करने वाले पत्तों से युक्त हैं।)
प्रश्नः 6. अलीनां ततिम् किं करोति? (भ्रमरों की पंक्ति क्या करती है?)
उत्तरम्—अलीनां ततिम् स्वनन्तीम्। (भ्रमरों की पंक्ति ध्वनि करती है।)
प्रश्नः 7. किं कृत्वा वीणां निनादयितुं कथितः? (क्या करके वीणा को बजाने के लिए कहा गया है?)
उत्तरम्—पादपे पुष्पपुञ्जे, मञ्जुकुञ्जे, अलीनां मलिनं ततिं दृष्ट्वा वीणां निनादयितुं कथितः।
(वृक्षों पर, पुष्पों के समूह पर, सुन्दर कुञ्जों पर भौंरों की काली पंक्ति अथवा भौंरों के काले समूह को देखकर वीणा बजाने को कहा गया है।)
प्रश्नः 8. कीदृशीं वीणां निनादयितुं कथितः? (कैसी वीणा बजाने के लिए कहा गया है?)
उत्तरम्—नवीनां वीणां निनादयितुं कथितः। (नवीन वीणा को बजाने के लिए कहा गया है।)
प्रश्नः 9. वीणाम् आकर्ण्य सुमं किं कुर्यात्? (वीणा को सुनकर पुष्प क्या करे?)
उत्तरम्—वीणाम् आकर्ण्य सुमं चलेत्। (वीणा को सुनकर पुष्प चलायमान हो जाये।)
प्रश्नः 10. नदीनां जलं कथम् उच्छलेत्? (नदियों का जल कैसे उछल पड़े?)
उत्तरम्—नदीनां जलं सलीलम् उच्छलेत्। (नदियों का जल खेल-खेल में उछल पड़े।)
प्रश्नः 11. वाणी कीदृशीं गीतिं गायतु? (वाणी कैसा गीत गाये?)
उत्तरम्—वाणी ललित-नीति-लीनाम् गीतिम् गायतु। (वाणी सुन्दर नीति से युक्त गीत गाये।
प्रश्नः 12. केषां कलापाः लसन्ति? (किनके समूह शोभा दे रहे हैं?)
उत्तरम्—ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः लसन्ति। (सुन्दर कोमल स्वरों के समूह शोभा देते हैं।)
प्रश्नः 13. यमुना तीरे केषां नतां पंक्तिमालोक्य वाणी वीणां निनादयतु? (यमुना के किनारे किनकी झुकी हुई पंक्ति को देखकर वाणी वीणा वादन करे।)
उत्तरम्—मधुमाधवीनां पंक्तिमालोक्य वाणी वीणां निनादयतु। (मधुर माधवी लताओं को देखकर वाणी वीणा बजाये।)
प्रश्नः 14. पुष्प पुञ्जे केषा ततिः स्वनति? (पुष्पसमूह पर किनकी पंक्ति स्वर करती है?)
उत्तरम्—पुष्प पुञ्जे अलीनाम् पंक्तिः स्वनति। (पुष्पसमूह पर भौंरों की पंक्ति स्वर करती है।)
प्रश्नः 15. 'भारतीवसन्तगीतिः' कस्य रचना अस्ति? ('भारतीवसन्तगीतिः' किसकी रचना है?)
उत्तरम्—भारतीवसन्तगीतिः पं. जानकी वल्लभ शास्त्रिणः रचना अस्ति। (भारतीवसन्तगीति पं. जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना है।

रेखांकित पदान्यधिकृत्य प्रश्न निर्माणं कुरुत। (रेखांकित शब्दों के आधार पर प्रश्न निर्माण कीजिए।)

प्रश्नः 1. वसन्ते लसन्ति सरसाः रसालाः। (वसन्त में सरस आम शोभा देते हैं।)

उत्तरम्—वसन्ते के लसन्ति? (वसन्त में कौन शोभा देते हैं?)

प्रश्नः 2. वाणी नवीनां वीणां निनादयतु? (वाणी नई वीणा बजाये।)

उत्तरम्—वाणी कीदृशीं वीणां निनादयतु? (वाणी कैसी वीणा बजाये?)

प्रश्नः 3. वहति मन्द-मन्द सनीरः समीरः। (धीरे-धीरे सजल वायु चलती है।)

उत्तरम्—मन्दम् मन्दम् कीदृशः समीरः वहति? (धीरे-धीरे कैसी हवा चलती है?)

प्रश्नः 4. उच्छलेत् कान्तं सलिलम्। (सुन्दर जल उछले।)

उत्तरम्—कीदृशं सलिलं उच्छलेत्। (कैसा पानी उछले?)

प्रश्नः 5. तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनां जलं उच्छलेत्। (तुम्हारी ओजस्वी वीणा को सुनकर नदियों का जल उछल पड़े।)

उत्तरम्—नदीनां जलं काम् आकर्ण्य उच्छलेत्? (नदियों का जल क्या सुनकर उछल पड़े?)

परियोजना–कार्यम्

पाठेऽस्मिन् वीणायाः चर्चा अस्ति। अन्येषां पञ्चवाद्ययन्त्राणां चित्रं रचयित्वा संकलय्य वा तेषां नामानि लिखत।

(इस पाठ में वीणा की चर्चा है। दूसरे पाँच वाद्य-यन्त्रों के चित्र बनाकर अथवा संकलित करके उनके नाम लिखिए।)

निर्देश—यहाँ कुछ वाद्य-यन्त्रों के नाम संस्कृत में दिये जा रहे हैं, छात्र इनके चित्र स्वयं बनाएँ या उनका संकलन करें।

वाद्य यन्त्र—(1) वंशी (बाँसुरी) (2) डमरूः (डमरू) (3) ढक्का (ढोल) (4) झिल्लिका (झाँझ) (5) मृदङ्गः (डफली) (6) सारङ्गी (सारंगी) (7) शङ्खः (शंख) (8) घण्टिका (घंटी) (9) जलतरङ्गम् (जलतरंग) (10) करतालः (करताल)।

2 स्वर्णकाकः

पाठ परिचयः—प्रस्तुत पाठ श्री पद्मशास्त्री द्वारा विरचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथासंग्रह से लिया गया है। जिसमें विभिन्न देशों की सौ लोक कथाओं का संग्रह है। यह वर्मा देश की श्रेष्ठतम कथाओं में से एक है, जिसमें लोभ और उसके दुष्परिणामों के साथ-साथ त्याग और उसके सुपरिणामों का वर्णन एक 'सुनहले पंखों वाले कौए' के माध्यम से किया गया है।

प्राचीन समय में एक गाँव में एक वृद्ध स्त्री रहती थी। उसकी पुत्री विनम्र और सुन्दर थी। एक बार माता ने उससे धूप में रखे चावलों की पक्षियों से रक्षा करने को कहा। कुछ समय पश्चात् एक सुनहले पंखों वाला कौआ उड़ता हुआ वहाँ पहुँचा और चावलों को खाने लगा। लड़की के मना करने पर उस कौए ने उस लड़की से सूर्योदय से पहले गाँव के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे आकर चावलों का मूल्य लेने को कहा। जब सूर्योदय से पहले वह लड़की वहाँ पहुँची तो उस लड़की ने वृक्ष के ऊपर सोने का महल देखा। लड़की की त्याग-भावना से प्रसन्न हुए कौए ने उस लड़की को सोने की सीढ़ी से ऊपर चढ़ाया तथा सोने की थाली में स्वादिष्ट भोजन कराया। लड़की ने कौए द्वारा दी गयी तीन सन्दूकों में से सबसे छोटी सन्दूक को चावलों के मूल्य के रूप में स्वीकार किया। लड़की ने घर पहुँचकर सन्दूक को खोलकर देखा, उस सन्दूक में भरे हीरों को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और वह उसी दिन से धनिक बन गई।

उसी गाँव की एक लालची स्त्री को जब उस निर्धन लड़की के धनिक बनने का पता चला तो उस लालची स्त्री ने भी अपनी पुत्री से धूप में रखे चावलों की पक्षियों से रक्षा करने को कहा। जब वह सुनहला कौआ वहाँ पहुँचकर चावलों को खाने लगा तो उस कौए को लड़की ने भी उन चावलों को खाने से रोका। कौए ने उस लड़की से भी सूर्योदय से पूर्व गाँव के बाहर पीपल के वृक्ष के नीचे आने को कहा। वह लड़की सूर्योदय से पहले वहाँ पहुँचकर कौए की निन्दा करने लगी और चावलों का मूल्य माँगने लगी। कौए द्वारा सीढ़ियों की पूछने पर अभिमानी लड़की बोली कि सोने की सीढ़ियों से आऊँगी, परन्तु 'सुनहले पंखों वाले कौए' ने उसके लिए ताँबे की सीढ़ी दी। कौए ने उस लड़की को भोजन भी ताम्रपात्र में कराया। कौए द्वारा दी गई तीन पेटियों में से सबसे बड़ी पेटी लेकर वह खुशी-खुशी घर लौटी और जब उस लड़की ने उस पेटी को खोलकर देखा तो भयंकर काले साँप के रूप में अपने लोभ के फल को प्राप्त कर दु:खी हुई। इसके पश्चात् उसने लालच करना छोड़ दिया।

मूलपाठः, शब्दार्थाः, सप्रसंग हिन्दी-अनुवादः, सप्रसंग संस्कृत-व्याख्याः अवबोधन कार्यम् च

1. *पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याः च एका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान् निक्षिप्य पुत्रीम् आदिशत्। "सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।" किञ्चित् कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तस्याः समीपम् अगच्छत्।*

नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत्- "तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते।" स्वर्णपक्षः काकः प्रोवाच, "मा शुचः। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहिः पिप्पलवृक्षमनु त्वया आगन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।" प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

शब्दार्थाः—पुरा = प्राचीनकाले (प्राचीन समय में), कस्मिंश्चिद् = कस्मिन् चित् (किसी), ग्रामे = वसथे (गाँव में), एका निर्धना = एका दरिद्रा (एक गरीब), स्त्री = वनिता (महिला/स्त्री), न्यवसत् = वसति स्म (रहती थी), तस्याः = (उसकी), एका दुहिता = एका पुत्री (एक पुत्री), विनम्रा = विनयशीला (विनम्र), मनोहरा = हृदयहारिणी (मनोहर), च = और, आसीत् = अवर्तत (थी), एकदा = एकस्मिन् दिवसे (एक बार), माता = जननी (माता ने), स्थाल्याम् = स्थालीपात्रे (थाली में), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), निक्षिप्य = प्रसार्य (फैलाकर/रखकर), पुत्रीम् = सुताम् (पुत्री को), आदिशत् = आदेशमददत् (आदेश दिया), सूर्यातपे = आतपे (धूप में), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), खगेभ्यः = विहगेभ्यः (पक्षियों से), रक्ष = रक्षणं कुरु (रक्षा करो), किञ्चित् कालादनन्तरम् = ईषत् समयपश्चात् (कुछ समय के

पश्चात्), एको विचित्रः काकः = एकः विचित्रः वायसः (एक अजीब कौआ), समुड्डीय = उत्प्लुत्य (उड़कर), तस्याः समीपम् अगच्छत् = ताम् समीपम् आगतवान् (उसके पास पहुँचा), न = मा (नहीं), एतादृशः = एतस्य प्रकारस्य (इस प्रकार का), स्वर्णपक्षः = स्वर्णमये पक्षे यस्य सः (सोने के पंखों वाला), रजतचञ्चुः = रजतमयः चञ्चुः यस्य सः (चाँदी की चोंच वाला), स्वर्णकाकः = स्वर्णस्य वायसः (सोने का कौआ/सुनहला कौआ), तया = (उस (लड़की) के द्वारा), पूर्वम् = पुरा (पहले), दृष्टः = अपश्यत् (देखा था), तम् = उस (कौए) को), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), खादन्तम् = भक्षयन्तम् (खाते हुए), हसन्तम् = हास्यं कुर्वन्तम् (हँसते हुए), च = और, विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर), बालिका = कन्या (उस लड़की ने), रोदितुम् = विलपितुम् (रोना), आरब्धा = प्रारम्भम् अकरोत् (शुरू कर दिया), तम् = (उस कौए को), निवारयन्ती = वारणं कुर्वन्ती (रोकती हुई), सा = (वह), प्रार्थयत् = न्यवेदयत् (प्रार्थना करने लगी), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), मा = न (नहीं/मत), भक्षय = खाद (खाओ), मदीया = मम (मेरी), माता = जननी (माता), अतीव = अत्यन्तम् (अत्यन्त/अत्यधिक), निर्धना = वित्तहीना/दरिद्रा (गरीब), वर्तते = अस्ति (है), स्वर्णपक्षः काकः = स्वर्णमये पक्षे यस्य सः (सोने के पंखों वाला/सुनहला कौआ), प्रोवाच = अकथयत् (कहा), मा शुचः = शोकं मा कुरु (शोक मत करो), सूर्योदयात्प्राग् = भानूदयात् पूर्वम् (सूर्योदय से पहले), ग्रामाद्बहिः = गाँव के बाहर, पिप्पलवृक्षमनु = पिप्पलतरोः अधः (पीपल के पेड़ के नीचे), त्वया = भवत्या (तुम्हारे द्वारा), आगन्तव्यम् = आगच्छेत् (आना चाहिए), अहम् = मैं, तुभ्यम् = ते/भवत्यै (तुम्हारे लिए), तण्डुलमूल्यम् = अक्षतमूल्यम् (चावलों का मूल्य), दास्यामि = अर्पणं करिष्यामि (दूँगा), प्रहर्षिता = प्रसन्ना (खुश हुई), बालिका = कन्या (लड़की ने), निद्रामपि न लेभे = शयनम् अपि न प्राप्तम् अकरोत् (नींद भी नहीं ली/सोई भी नहीं)।

हिन्दी-अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश श्रीपद्मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से उद्धृत 'स्वर्णकाकः' नामक पाठ से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में धूप में रखे बालिका द्वारा रक्षित चावलों को सुनहले कौए द्वारा खाने और चावलों का मूल्य चुकाने के लिए कहने का वर्णन है।

हिन्दी-अनुवाद—प्राचीन समय में किसी गाँव में एक गरीब वृद्ध महिला रहती थी। उसकी एक विनम्र और मनोहर पुत्री थी। एक बार माता ने थाली में चावलों को रखकर पुत्री को आदेश दिया—धूप में रखे चावलों की पक्षियों से रक्षा करना। कुछ समय पश्चात् एक अजीब कौआ उड़कर उसके पास पहुँचा।

इस प्रकार का सोने के पंखों वाला, चाँदी की चोंच वाला सुनहला कौआ उसने पहले नहीं देखा था। उसको चावलों को खाता हुआ और हँसता हुआ देखकर लड़की ने रोना शुरू कर दिया। उसको रोकते हुए वह प्रार्थना करने लगी—चावलों को मत खाओ। मेरी माता बहुत गरीब है। सुनहला कौआ बोला—दुखी मत होओ। तुम सूर्योदय से पहले गाँव के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे आना। मैं तुम्हें चावलों का मूल्य दूँगा। खुश (प्रसन्न) हुई लड़की को नींद भी नहीं आई अर्थात् वह सोई भी नहीं।

संस्कृत-व्याख्याः

सन्दर्भः—प्रस्तुतगद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्याः 'स्वर्णकाकः' नामक पाठात् अवतरितोऽस्ति। प्रस्तुतपाठः श्री पद्मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथासंग्रहात् सङ्कलितः अस्ति। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' नामक पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत पाठ श्री पद्म शास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नाम के कथा ग्रन्थ से संकलित है।)

प्रसङ्गः—प्रस्तुतगद्यांशे वर्णितं यदेकः स्वर्णकाकः सूर्यातपे स्थाल्यां स्थितान् बालिकया रक्षितान् अक्षतान् खादति तेषां मूल्यं च प्रदातुं कथयति। (प्रस्तुत गद्यांश में वर्णित है कि एक सोने का कौआ धूप में थाली में रखे चावलों को खाता है और उनका मूल्य चुकाने के लिए कहता है।)

व्याख्याः—प्राचीनकाले कस्मिन् अपि वसथे (ग्रामे) एका दरिद्रा वृद्धा वनिता (स्त्री) वसति स्म। तस्याः एका विनयशीला हृदयहारिणी च पुत्री आसीत्। एकस्मिन् दिवसे जननी स्थाल्यां अक्षतान् प्रसार्य सुतायै आदेशम् अददात् यत् सूर्यातपे अक्षतानां विहगेभ्यः रक्षणं कुरु। ईषत् समयपश्चात् एकः विचित्रवायसः उत्प्लुत्य तस्याः समीपम् आगच्छत्। न तस्य प्रकारस्य हेममयः पक्षः रजतमयः चञ्चुः स्वर्णकाकः एतया पुरा दृष्टः। तम् (स्वर्णकाकम्) अक्षतान् भक्षयन्तम् हास्यं च कुर्वन्तं दृष्ट्वा सा कन्या विलपितुम् आरभत। काकं वारयन्ती सा न्यवेदयत्—अक्षतान् मा खाद। मम जननी अत्यन्तं दरिद्रा अस्ति। हेममयः पक्षः वायसः अकथयत्—शोकं मा कुरु। भानूदयात् पूर्वं ग्रामात् बहिः पिप्पलतरोः अधः भवती आगच्छेत्। अहं भवत्यै अक्षतमूल्यम् अर्पणं करिष्यामि। प्रसन्ना कन्या शयनम् अपि न प्राप्तम् अकरोत्। (प्राचीनकाल में किसी गाँव में

एक गरीब बुढ़िया रहती थी। उसकी एक विनम्र, हृदय को हरण करने वाली बेटी थी। एक दिन माता ने थाली में चावलों को फैलाकर पुत्री को आदेश दिया कि सूर्य की धूप तक चावलों की पक्षियों से रक्षा करो। कुछ समय बाद एक विचित्र कौआ उड़कर उसके पास आया। इस प्रकार का सोने के पंखों वाला और चाँदी की चोंच वाला कौआ इससे पहले नहीं देखा गया। उस (सोने के कौवे) को चावल चुगते हुए और हँसते हुए को देखकर वह कन्या रोने लगी। कौए को रोकती हुई उसने निवेदन किया—"चावलों को मत खाओ। मेरी माता बहुत गरीब है।" सोने की चोंच वाले कौवे ने कहा—"दुखी मत हो। सूरज निकलने से पहले गाँव के बाहर पीपल के नीचे आप आ जाना। मैं आपके लिए चावलों का मूल्य सौंप दूँगा।" खुश हुई कन्या सो भी नहीं पाई।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) बालिका तण्डुलान् केभ्यः रक्षेतु? (बालिका किनसे चावलों की रक्षा करे?)

(ख) 'तण्डुलान् मा खादय' इति कोऽवदत्? ('चावल मत खाओ' ऐसा किसने कहा?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) बालिका केन कारणेन रोदितुम् आरब्धा? (बालिका किस कारण से रोई?)

(ख) कीदृशः काकः बालिकया पूर्वं न दृष्टः? (बालिका ने कैसा कौआ पहले नहीं देखा?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'स्वर्णपक्षी' इत्यत्र किं पदं विशेषण पदम्?। ('स्वर्णपक्षी' इनमें कौनसा पद विशेषण पद है?)

(ख) 'धनविहीना' इति पदस्य समानार्थी गद्यांशात् चित्वा लिखत।
('धनविहीना' इस पद का समानार्थी पद गद्यांश से लिखिए।)

उत्तराणि—(1) (क) खगेभ्यः। (पक्षियों से)। (ख) बालिका (लड़की ने)।

(2) (क) तण्डुलान् खादन्तं हसन्तं तं काकम् अवलोक्य बालिका रोदितुम् आरब्धा। (चावलों को खाते हुए हँसते हुए उस कौआ को देखकर लड़की रोने लगी।)

(ख) नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्ण काकस्तया पूर्व दृष्टः। (ऐसा सोने की पंखों और चाँदी की चोंच वाला सोने का कौए उसने पहले नहीं देखा था।)

(3) (क) स्वर्ण (सोना)। (ख) निर्धना (गरीब)।

2. *सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। वृक्षस्योपरि विलोक्य सा च आश्चर्यचकिता सञ्जाता यत् तत्र स्वर्णमयः प्रासादो वर्तते। यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं "हंहो बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयम् ताम्रमयं वा"? कन्या अवदत् "अहं निर्धनमातुः दुहिता अस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि।" परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्ण-भवनम् आरोहत।*

शब्दार्थाः—सूर्योदयात्पूर्वमेव = भानूदयात् प्राग् एव (सूर्योदय से पहले ही), सा = (वह (बालिका)), तत्रोपस्थिता = तस्मिन् स्थाने सन्निहिता (वहाँ उपस्थित हो गयी), वृक्षस्योपरि = तरोः उपरि (पेड़ के ऊपर), विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर), सा = (वह), च = (और), आश्चर्यचकिता = विस्मिता (आश्चर्यचकित), सञ्जाता = अभवत् (हो गयी), यत् = (कि), तत्र = तस्मिन् स्थाने (उस जगह/वहाँ) स्वर्णमयः = हेममयः (सोने का), प्रासादः = राजमन्दिरम् (महल), वर्तते = अस्ति (है), यदा = यस्मिन् समये (जब), काकः = वायसः (कौआ), शयित्वा = शयनं कृत्वा (सोकर), प्रबुद्धः = जागरणम् अकरोत् (जागा), तदा = तस्मिन् समये (तब), तेन = काकेन (उस कौए ने), स्वर्णगवाक्षात् = हेममयवातायनात् (सोने की खिड़की से), कथितं = अकथयत् (कहा), हं हो बाले! = भो बाले (अरे बालिका), त्वमागता = भवती आगता (तुम आ गई हो), तिष्ठ = स्थिरा भव (ठहरो), अहम् = मैं, त्वत्कृते = तुभ्यम् (तुम्हारे लिए), सोपानम् = (सीढ़ी), अवतारयामि = अवतीर्णं करोमि (उतारता हूँ), तत्कथय = तु वद (तो बोलो), स्वर्णमयं = हेममयं (सोने से बनी, सोने की), रजतमयं = रूप्यमयं (चाँदी से बनी, चाँदी की), वा = (अथवा), ताम्रमयं = लोहितायसमयं (ताँबे से बनी, ताँबे की), कन्या = बालिका (लड़की), अवदत् = प्रावोचत् (बोली), अहं निर्धनमातुः = अहं दरिद्रायाः जनन्याः (मैं निर्धन/गरीब माँ की), दुहिता अस्मि = पुत्री अस्मि (पुत्री हूँ), ताम्रसोपानेनैव = लोहितायसेन निर्मितेन सोपानेन एव (ताँबे की बनी सीढ़ी से ही), आगमिष्यामि =

आगमनं करिष्यामि (आऊँगी), परं = परञ्च (लेकिन), स्वर्णसोपानेन = हेमनिर्मितसोपानेन (सोने की सीढ़ी से), स्वर्णभवनम् = हेममयं भवनम् (सोने के महल को), सा = (वह), आरोहत = आरूढवती (चढ़ी, पहुँची)।

हिन्दी-अनुवाद:

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश श्री पद्मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से उद्धृत 'स्वर्णकाक:' नामक पाठ से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में बालिका के सूर्योदय से पहले ही गाँव के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे पहुँचकर पेड़ के ऊपर सोने के महल को देखकर आश्चर्यचकित होने एवं सोने की सीढ़ियों से स्वर्णमहल में पहुँचने का वर्णन है।

हिन्दी-अनुवाद—सूर्योदय से पहले ही वह (लड़की) वहाँ आ गयी। पेड़ के ऊपर देखकर वह आश्चर्यचकित हो गयी क्योंकि वहाँ सोने का महल था। जब कौआ सोकर जागा तब उसने सोने की खिड़की में से (झाँककर) कहा—अरे लड़की! तुम आ गयी हो, ठहरो, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूँ, तो कहो सोने से बनी (सोने की), चाँदी से बनी (चाँदी की) अथवा ताँबे से बनी (ताँबे की)? लड़की बोली—मैं गरीब माता की बेटी हूँ। ताँबे की बनी सीढ़ी से ही आऊँगी। लेकिन सोने की सीढ़ी से वह सोने के महल में पहुँची।

संस्कृत-व्याख्या:

सन्दर्भ:—प्रस्तुतगद्यांश अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्या: 'स्वर्णकाक:' पाठात् उद्धृत:। पाठोऽयं श्री पद्मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' इति कथासंग्रहात् संकलितो वर्तते। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषी से 'स्वर्णकाक:' पाठ से उद्धृत है। यह पाठ श्री पद्म शास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' कथा-संग्रह से सङ्कलित है।)

प्रसङ्ग:—गद्यांशोऽयम् वर्णयति यत् बालिका काकेन निर्दिष्टस्थानम् अगच्छत्, तत्र च गत्वा सा वृक्षस्योपरि स्वर्णमयप्रासादं दृष्ट्वा विस्मिता जाता। (यह गद्यांश वर्णन करता है कि लड़की कौवा द्वारा बताये गये स्थान पर गई और वहाँ जाकर वह वृक्ष के ऊपर सोने के महल को देखकर आश्चर्यचकित हो गई।)

व्याख्या:—सा बालिका भानूदयात् प्राग् एव काकेन निर्दिष्ट स्थानं आगच्छत्। वृक्षस्य उपरि दृष्ट्वा सा विस्मिता अभवत् यत् तत्र हेममयं प्रासादम् आसीत्। यदा काक: शयनं कृत्वा जागरणम् अकरोत् तदा स हेममयात् वातायनात् अकथयत्—हे बाले! त्वम् आगतवती, स्थिरा भव अहं तुभ्यं सोपानम् अवतीर्णं करोमि, कथय तु हेममयं सोपानं रजतमयं ताम्रमयं वा? बालिका अवदत् यदहं दरिद्राया: जनन्या: पुत्री अस्मि, ताम्रमयेन एव सोपानेन आगमिष्यामि। परञ्च सा हेममयेन सोपानेन हेममयं प्रासादं प्राप्तम् अकरोत्। (वह लड़की सूरज उगने से पहले ही कौआ द्वारा बताये हुए स्थान पर पहुँच गई। पेड़ के ऊपर देखकर वह आश्चर्यचकित हो गई कि वहाँ सोने का महल था। जब कौआ सोकर जागा तब उसने सोने की खिड़की से कहा—'हे बालिका तुम आ गई, ठहरो, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूँ, कहो तो सोने की, चाँदी की या ताँबे की?" लड़की बोली कि "मैं गरीब माँ की बेटी हूँ, ताँबे की सीढ़ी से ही आ जाऊँगी। परन्तु वह सोने की सीढ़ी से ही सोने के महल पर पहुँची।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) बालिका तत्र कदा उपस्थिता? (बालिका कहाँ कब उपस्थित हो गई?)

(ख) काकस्य प्रासाद: कुत्र आसीत्? (कौवे का महल कहाँ था?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) बालिका कस्मात् आश्चर्यचकिता सञ्जाता? (बालिका किसलिए आश्चर्यचकित हो गई?)

(ख) कन्या काकं किम् अवदत्? (कन्या ने कौवे से क्या कहा?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'विलोक्य' इति पदे प्रत्ययं लिखत। ('विलोक्य' पद में प्रत्यय लिखिए।)

(ख) 'स्वर्णमय: प्रासाद: वर्तते' एतेषु वाक्येषु विशेषणं विशेष्यं च पदम् निर्दिशत।
(यहाँ विशेषण और विशेष्य पदों का निर्देश कीजिए।)

उत्तराणि—(1) (क) सूर्योदयात्पूर्वम् (सूर्य निकलने से पहले)।

(ख) वृक्षस्योपरि। (वृक्ष के ऊपर)।

(2) (क) वृक्षस्योपरि स्वर्णमयं प्रासादम् अवलोक्य आश्चर्यचकिता सञ्जाता। (वृक्ष के ऊपर सोने के महल को देखकर आश्चर्यचकित हो गई।)

(ख) अहं निर्धनमातुः दुहिता अस्मि ताम्र सोपानेनैव आगमिष्यामि। (मैं गरीब माँ की बेटी हूँ। ताँबे की सीढ़ी से ही आ जाऊँगी।)

(3) (क) ल्यप्। (ख) विशेषणम्—स्वर्णमयः, विशेष्यं च—प्रासादः।

3. चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। श्रान्तां तां विलोक्य काकः अवदत्–"पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम्–वद त्वं स्वर्णस्थाल्यां भोजनं करिष्यसि किं वा रजतस्थाल्याम् उत ताम्रस्थाल्याम्"? बालिका अवदत्– ताम्रस्थाल्याम् एव अहं – "निर्धना भोजनं करिष्यामि।" तदा सा आश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं "परिवेषितम्।" न एतादृशम् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती। काकोऽवदत्– बालिके! अहमिच्छामि यत् त्वम् सर्वदा अत्रैव तिष्ठ परं तव माता तु एकाकिनी वर्तते। अतः "त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।"

शब्दार्थाः—चिरकालम् = बहुकालं यावत् (बहुत देर तक), भवने = प्रासादे (महल में), चित्रविचित्रवस्तूनि = अद्‌भुतानि वस्तूनि (अद्‌भुत वस्तुओं को), सज्जितानि = अलंकृतानि (सजी हुई), दृष्ट्वा = विलोक्य (देखकर), सा = (वह), विस्मितम् = आश्चर्यचकितम् (आश्चर्यचकित), गता = सञ्जाता (हुई), श्रान्ताम् = क्लान्तां (थकी हुई), ताम् = (उसे), विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर), काकः = वायसः (कौआ), अवदत् = प्राह (बोला), पूर्वम् = प्राग् (पहले), लघुप्रातराशः = लघुकल्यवर्तः (थोड़ा सुबह का नाश्ता), क्रियताम् = करोतु (करो), वद = कथय (बोलो), त्वम् = (तुम), स्वर्णस्थाल्याम् = स्वर्णेन निर्मितस्थाल्यां (सोने की थाली में), भोजनम् = अशनम् (भोजन), करिष्यसि = (करोगी), किं वा = अथवा (अथवा), रजतस्थाल्याम् = रूप्येन निर्मितस्थाल्यां (चाँदी की थाली में), अकथयत् = व्याजहार (कहा), ताम्रस्थाल्याम् = लोहितायसेन निर्मितस्थाल्यां (ताँबे की थाली में), एव = निश्चयेन (ही), अहम् = मैं, निर्धना = दरिद्रा (निर्धन), भोजनम् = अशनम् (भोजन), करिष्यामि = (करूँगी), तदा = तस्मिन् समये (तब), सा = वह (लड़की), आश्चर्यचकिता = विस्मिता (आश्चर्यचकित), सञ्जाता = गता (हो गई), यदा = यस्मिन् काले (जब), स्वर्णकाकेन = हेमवायसेन (सुनहले कौए ने), स्वर्णस्थाल्याम् = स्वर्णेन निर्मितस्थाल्यां (सोने की थाली में), भोजनम् = अशनम् (भोजन), परिवेषितम् = पर्यवेषणं कृतम् (परोसा), न = मा (नहीं), एतादृशम् = ईदृशं (ऐसा), स्वादु = स्वादिष्टम् (स्वादिष्ट), भोजनम् = अशनं (भोजन), अद्यावधि = वर्तमानं दिनं यावत् (आज तक), बालिका = सा कन्या (उस लड़की ने), खादितवती = भक्षितवती (खाया था), काकः = वायसः (कौआ), अवदत् = ब्रूते (बोला), बालिके = कन्ये (बालिका), अहमिच्छामि = अहमभिलषामि (मैं चाहता हूँ), यत् = कि, त्वम् = (तुम), सर्वदा = सर्वस्मिन् काले (हमेशा), अत्रैव = एतस्मिन् स्थाने एव (यहीं), तिष्ठ = वासं कुरु (रहो), परम् = परञ्च (लेकिन), तव = ते (तुम्हारी), माता = जननी (माता), वर्तते = अस्ति (है), एकाकिनी = एकला (अकेली), त्वम् = (तुम), शीघ्रमेव = द्रुतमेव (शीघ्र ही), स्वगृहम् = स्वगेहं (अपने घर), गच्छ = गमनं कुरु (जाओ)।

हिन्दी-अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' नामक पाठ से उद्‌धृत है। यह पाठ श्री पद्‌मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से संकलित है।

प्रसंग—यहाँ वर्णन है कि सोने के महल में सुनहले कौए ने बालिका के साथ कैसा व्यवहार किया।

हिन्दी-अनुवाद—बहुत देर तक महल में अत्यन्त अद्‌भुत वस्तुओं को सजी हुई देखकर वह आश्चर्यचकित हो गयी। उसे थकी हुई देखकर कौआ उससे बोला कि पहले आप थोड़ा-सा सुबह का नाश्ता कर लो, बोलो तो सोने की थाली में भोजन करोगी अथवा चाँदी की थाली में या ताँबे की थाली में ? लड़की बोली कि मैं गरीब हूँ, मैं तो ताँबे की थाली में ही भोजन करूँगी। तब वह आश्चर्यचकित हो गयी जब सुनहले कौए ने उसे सोने की थाली में भोजन परोसा। लड़की ने ऐसा स्वादिष्ट भोजन आज तक नहीं खाया था। कौआ उससे बोला कि मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा यहीं रहो लेकिन तुम्हारी माता अकेली हैं। अतः तुम जल्दी ही अपने घर जाओ।

संस्कृत-व्याख्याः

सन्दर्भः—प्रस्तुतः गद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्याः 'स्वर्णकाकः' पाठात् उद्‌धृतः। पाठोऽयं श्रीपद्‌मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' इति कथासंग्रहात् सङ्कलितो वर्तते। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' पाठ से उद्‌धृत है। यह पाठ श्रीपद्‌मशास्त्री-रचित 'विश्वकथाशतकम्' से संकलित है।)

प्रसंगः—वर्णितमत्र यत् स्वर्णकाकः स्वप्रासादे बालिकया सह कीदृशं व्यवहारम् अकरोत्। (इसमें बालिका के साथ कौआ के सद्व्यवहार का वर्णन किया गया है।)

व्याख्याः—बहुकालं यावत् स्वर्णप्रासादे अलङ्कृतानि अति अद्भुतवस्तूनि विलोक्य सा आश्चर्यचकिता अभवत्। तां क्लान्तां दृष्ट्वा काकः तामवदत् यत् पूर्वं भवती लघुकल्यवर्तं करोतु, कथय तु स्वर्णमयस्थाल्यां, रजतमयस्थाल्यां ताम्रमयस्थाल्यां वा भोजनं करिष्यसि। बालिका अवदत् यदहं निर्धना अस्मि, अहं तु ताम्रमयस्थाल्यामेव अशनं करिष्यामि। यदा स्वर्णकाकः तस्यै स्वर्णमयस्थाल्यां भोजनम् अददात्। तदा सा चकिता अभवत्। बालिका ईदृशं स्वादिष्टभोजनं वर्तमानं दिनं यावत् न अखादत्। काकः तामवदत् यदहम् अभिलषामि यत् त्वम् सदा अत्रैव वासं कुरु परं तव माता एकला अस्ति। अतः त्वं शीघ्रम् एव स्वगृहं गच्छ। (बहुत देर तक सोने के महल में सजी हुई अनोखी वस्तुओं को देखकर वह आश्चर्यचकित हो गई। उसे थका हुआ देखकर उससे कौआ बोला कि पहले आप थोड़ा कलेवा कर लो, बोलो तुम सोने की थाली में, चाँदी की थाली में या ताँबे की थाली में भोजन करोगी। बालिका बोली कि मैं गरीब हूँ, मैं तो ताँबे की थाली में ही खाना खाऊँगी (भोजन करूँगी)। जब सोने का कौवा उसके लिए सोने की थाली में भोजन लाया तो वह चकित हो गई। लड़की ने ऐसा स्वादिष्ट भोजन आज तक नहीं खाया। कौआ उससे बोला कि मैं चाहता हूँ कि तुम सदा यहाँ ही रहो परन्तु तुम्हारी माता अकेली हैं। अतः तुम शीघ्र ही अपने घर चली जाओ।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) कानि दृष्ट्वा बालिका विस्मयं गता? (किन्हें देखकर बालिका आश्चर्य करने लगी?)

(ख) स्वर्णकाकेन तस्मै कस्यां भोजनं पर्यवेषितम्? (सोने के कौवे ने कैसी थाली में उसे भोजन परोसा?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) काकः बालिकां कस्मात् न वारयति स्म? (कौवे ने बालिका को क्यों नहीं रोका?)

(ख) श्रान्तां बालिकाम् अवलोक्य काकः किं कर्तुम् अवदत्?
(थकी बालिका को देखकर कौवे ने क्या करने के लिए कहा?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'दृष्ट्वा सा विस्मयं गता' अत्र सा इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्? ('दृष्ट्वा सा विस्मयं गता' यहाँ 'सा' सर्वनाम पद किसके लिए प्रयोग हुआ है?)

(ख) 'त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ' इति कः कम् अकथयत्? ('तुम शीघ्र अपने घर जाओ' यह किसने किससे कहा?)

उत्तराणि—(1) (क) चित्रविचित्र वस्तूनि (रंग-बिरंगी अद्भुत वस्तुओं को)।

(ख) स्वर्णस्थाल्याम् (सोने की थाली में)।

(2) (क) यतः तस्य माता गृहे एकाकिनी अस्ति। (क्योंकि उसकी माँ घर पर अकेली है।)

(ख) श्रान्तां बालिका अवलोक्य काकः लघुप्रातराशं कर्तुम् अवदत्। (थकी बालिका को देखकर कौवे ने थोड़ा कलेवा करने के लिए कहा।)

(3) (क) बालिकायै (बालिका के लिए।)

(ख) काकः बालिकाम् अकथयत्। (कौवे ने बालिका से कहा।)

4. *इत्युक्त्वा काकः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः निस्सार्य तां प्रत्यवदत्- "बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्।" लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितम् इयत् एव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।*

गृहमागत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता, तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सञ्जाता।

शब्दार्थाः—इत्युक्त्वा = एवं कथयित्वा (ऐसा कहकर), काकः = वायसः (कौए ने), कक्षाभ्यन्तरात् = कोष्ठस्य गर्भात् (कमरे के अन्दर से), तिस्रः = तीन, मञ्जूषाः = पेटिकाः (पेटियाँ), निस्सार्य = निष्कासनं कृत्वा (निकालकर), ताम् = उससे, लड़की से, प्रत्यवदत् = अकथयत् (कहा), बालिके = कन्ये (बाला), यथेच्छम् = इच्छानुसारेण (अपनी इच्छा के अनुसार), गृहाण = ग्रहणं कुरु (ले लो), मञ्जूषामेकाम् = एकां पेटिकां (एक पेटी), लघुतमाम् = क्षुद्रतमां (सबसे छोटी),

मञ्जूषाम् = पेटिकां (पेटी को), प्रगृह्य = ग्रहणं कृत्वा (लेकर), बालिकया = कन्यया (बालिका द्वारा), कथितम् = उक्तम् (कहा गया), इयत् एव = एतन्मात्रम् एव (इतना ही), मदीय = मम (मेरे), तण्डुलानाम् = अक्षतानां (चावलों का), मूल्यम् = अर्घम् (कीमत/मूल्य), गृहमागत्य = सदनमागत्य (घर आकर), तया = (उसके द्वारा), मञ्जूषा = पेटिका (पेटी), समुद्घाटिता = भेदनं कृतं (खोली गई), तस्याम् = (उसमें), महार्हाणि = बहुमूल्यानि (बहुमूल्य), हीरकाणि = रत्नमुख्यानि (हीरों को), विलोक्य = दृष्ट्वा (देखकर), सा = (वह), प्रहर्षिता = आनन्दिता अभवत् (आनन्दित हुई), तद्दिनाद्धनिका = तस्मात् वासरात् धनिका (उसी दिन से धनवती), सञ्जाता = अभवत् (हो गई)।

हिन्दी-अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ श्री पद्मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से संकलित है।

प्रसंग—यहाँ लड़की के लोभरहित होने तथा कौए की उसके प्रति उदारता का वर्णन है।

हिन्दी-अनुवाद—ऐसा कहकर कौए ने कमरे के अन्दर से तीन पेटियाँ (सन्दूकें) निकालकर उससे कहा—बालिका! अपनी इच्छानुसार एक सन्दूक ले लो। सबसे छोटी सन्दूक लेकर लड़की ने कहा—यह ही मेरे चावलों का मूल्य है। घर आकर उसने सन्दूक खोला, उसमें (सन्दूक में) बहुमूल्य हीरों को देखकर वह प्रसन्न हो गयी और उसी दिन से धनिक हो गई।

संस्कृत-व्याख्या:

सन्दर्भः—प्रस्तुतगद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्याः 'स्वर्णकाकः' पाठात् उद्धृतः। पाठोऽयं श्रीपद्मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' इति कथासंग्रहात् संकलितो वर्तते। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' से 'स्वर्णकाकः' पाठ से लिया गया है। यह पाठ श्री पद्मशास्त्री-रचित 'विश्वकथाशतकम्' कथा-संग्रह से संकलित है।)

प्रसंगः—गद्यांशोऽयं वर्णयति बालिकायाः लोभराहित्यं काकस्य च तां प्रति औदार्यम्। (यह गद्यांश बालिका की लोभहीनता तथा कौए की उसके प्रति उदारता का वर्णन करता है।)

व्याख्याः—एवं कथयित्वा काकः कोष्ठस्य गर्भात् तिस्रः पेटिकाः बहिः आनीय तां (बालिकाम्) अवदत्—हे बालिके! स्वेच्छया एकां पेटिकां गृहाण। बालिका क्षुद्रतमां पेटिकां गृहीत्वा अवदत्—एतन्मात्रम् मम अक्षतानां अर्घम् अस्ति। गृहम् आगत्य सा पेटिकाम् उद्घाटयत्। तस्यां बहुमूल्यानि हीरकाणि दृष्ट्वा सा प्रसन्ना अभवत्। तस्मात् वासरात् च धनवती अभवत्। (इस प्रकार कहकर कौआ ने कोटर से तीन पेटियाँ लाकर उस बालिका से कहा—हे बालिके! अपनी इच्छा से एक पेटी ले लो। बालिका ने सबसे छोटी पेटी को लेकर कहा—'इतना ही मेरे चावलों का मूल्य है।' घर आकर उसने पेटी को खोला। उसमें बहुमूल्य हीरों को देखकर वह प्रसन्न हो गई। उसी दिन से वह धनवाली (धनाढ्य) हो गई।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) काकः कति मञ्जूषाः आनयत? (कौवा कितनी पेटियाँ लाया?)

(ख) बालिका कीदृशीं मञ्जूषां गृहीतवती? (बालिका ने कैसी पेटी ली?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) मञ्जूषायां कानि आसीत्? (कितनी मंजूषाएँ थीं?)

(ख) मञ्जूषां प्रगृह्य बालिका किमवदत्? (पेटी को पाकर लड़की ने क्या कहा?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'तां प्रत्यवदत्' अत्र 'ताम्' इति सर्वनाम पदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
(तां प्रत्यवदत् यहाँ 'ताम्' सर्वनाम किसके लिए प्रयोग हुआ है?)

(ख) गद्यांशात् 'पेटिका' इति पदस्य पर्यायं चित्वा लिखत। (गद्यांश से 'पेटिका' का पर्यायवाची लिखिए।)

उत्तराणि—(1) (क) तिस्रः (तीन)। (ख) लघुतमाम् (सबसे छोटी को)।

(2) (क) मञ्जूषायां बहुमूल्यानि हीरकाणि आसन्। (मंजूषा में महँगे हीरे थे।)

(ख) तया कथतम् इयम् मे तण्डुलानां मूल्यम्। (यह मेरे चावलों की कीमत है, ऐसा उसने कहा।)

(3) (क) बालिकाम् (बालिका को)। (ख) मञ्जूषा (पेटी)।

5. *तस्मिन्नेव ग्रामे एका अपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। तस्या अपि एका पुत्री आसीत्। ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यम् ज्ञातवती। सूर्यातपे तण्डुलान् निक्षिप्य तयापि स्वसुता रक्षार्थं नियुक्ता। तथैव स्वर्णपक्षः काकः तण्डुलान् भक्षयन् तामपि तत्रैवाकारयत्। प्रातस्तत्र गत्वा सा काकं निर्भर्त्सयन्ती प्रावोचत्–"भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।" काकोऽब्रवीत्–"अहं त्वत्कृते सोपानम् अवतारयामि। तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयं ताम्रमयं वा।" गर्वितया बालिकया प्रोक्तम्–"स्वर्णमयेन सोपानेन अहम् आगच्छामि।" परं स्वर्णकाकस्तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्। स्वर्णकाकस्तां भोजनमपि ताम्रभाजने एव अकारयत्।*

शब्दार्थाः–तस्मिन् एव ग्रामे = अमुष्मिन् एव वसथे (उसी गाँव में), एकाऽपरा = एका अन्या (एक दूसरी), लुब्धा = लोभवशीभूता (लोभी), वृद्धा = जरठा (बुढ़िया), न्यवसत् = वासं करोति स्म (रहती थी), तस्या = अमुष्याः (उसकी), अपि = (भी), एका पुत्री = एका दुहिता (एक पुत्री), आसीत् = अवर्तत (थी), ईर्ष्यया = मत्सरेण (ईर्ष्या से), सा = (वह), तस्य स्वर्णकाकस्य = अमुष्य हेमवायसस्य (उस सोने के कौए के), रहस्यम् = गुप्तभेदं (रहस्य को), ज्ञातवती = बोधमाना (जान गई), सूर्यातपे = भानोः उष्णतायां (धूप में), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), निक्षिप्य = स्थिरीकृत्य (रखकर), तयापि = (उसने भी), स्वसुता = स्वपुत्रीं (अपनी पुत्री), रक्षार्थम् = रक्षायाः कृते (रक्षा के लिए), नियुक्ता = नियुक्ताम् अकरोत् (नियुक्त किया), तथैव = तेनैव प्रकारेण (उसी तरह), स्वर्णपक्षः काकः = हेमपक्षः वायसः (सुनहले पंखों वाले कौए ने), तण्डुलान् = अक्षतान् (चावलों को), भक्षयन् = खादन् (खाते हुए), तत्रैव = तस्मिन् एव स्थाने (वहीं), आकारयत् = आगन्तुम् अकथयत् (बुलाया), प्रातस्तत्र = प्रातःकालं तत्र (सुबह वहाँ), गत्वा = प्रस्थानं कृत्वा (जाकर), सा = (वह), काकम् = वायसं (कौए की), निर्भर्त्सयन्ती = निन्दां कुर्वन्ती (निन्दा करती हुई), प्रावोचत् = अवदत् (बोली), भो नीचकाकः = हे क्षुद्रवायसः (अरे नीच कौए), अहमागता = अहम् अत्र आगच्छम् (मैं यहाँ आ गयी हूँ), मह्यम् = मम कृते (मुझे), तण्डुलमूल्यम् = अक्षतानां मूल्यं (चावलों का मूल्य), प्रयच्छ = यच्छ (दो), काकः अब्रवीत् = वायसः अवदत् (कौआ बोला), अहम् = मैं, त्वत्कृते = तुभ्यम् (तुम्हारे लिए), सोपानम् अवतारयामि = सोपानम् अवतीर्णं करोमि (सीढ़ी उतारता हूँ।), तत्कथय = तु वद (तो बोलो), स्वर्णमयम् = हेममयं (सोने की बनी), रजतमयम् = रूप्यमयं (चाँदी की बनी), ताम्रमयम् = लोहितायसमयं (ताँबे की बनी), वा = अथवा, गर्वितया = अभिमानेन (घमण्ड से), बालिकया = कन्यया (लड़की), प्रोक्तम् = अब्रवीत् (बोली), स्वर्णमयेन सोपानेन = हेमनिर्मितसोपानेन (सोने की बनी सीढ़ी से), अहम् आगच्छामि = अहम् आगमिष्यामि (मैं आऊँगी), परम् = परञ्च (लेकिन), स्वर्णकाकः = हेमवायसः (सुनहले कौए ने), तत्कृते = तस्यै (उसके लिए), ताम्रमयं सोपानमेव = लोहितायसमयं सोपानम् एव (ताँबे की सीढ़ी ही), प्रायच्छत् = अददात् (दी), स्वर्णकाकः = हेमवायसः (सुनहले कौए ने), ताम् = (उसको), भोजनमपि = अशनमपि (भोजन भी), ताम्रभाजने = लोहितायसपात्रे (ताँबे के बर्तन में), एव अकारयत् = एव पर्यवेषयत् (ही कराया/ही दिया)।

हिन्दी-अनुवादः

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' पाठ से उद्धृत है। यह पाठ श्रीपद्मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' नामक कथा-संग्रह से संकलित है।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश में वर्णन है कि एक लालची महिला ने अपनी पुत्री से धूप में रखे चावलों की रक्षा करने को कहा। साथ ही सुनहले कौए के चावल खाने पर उससे उनका मूल्य लेने को भी कहा।

हिन्दी-अनुवाद–उसी गाँव में एक दूसरी लालची वृद्धा (बूढ़ी) औरत रहती थी। उसकी भी एक बेटी थी। ईर्ष्या से वह उस सुनहले कौए के रहस्य को जान गई। उसने भी धूप में चावलों को रखकर अपनी पुत्री को (उनकी) रक्षा करने के लिए नियुक्त किया। उसी तरह सुनहले पंखों वाले कौए ने चावलों को खाते हुए, उसे भी वहीं बुलाया। सुबह वहाँ जाकर वह कौए की निन्दा करती हुई बोली–अरे नीच कौए! मैं आ गयी, मुझे चावलों का मूल्य दो। कौआ बोला–मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूँ, तो बोलो सोने की बनी, चाँदी की बनी अथवा ताँबे की बनी। घमण्ड से लड़की बोली–मैं सोने की बनी सीढ़ी से आऊँगी। लेकिन सुनहले कौए ने उसके लिए ताँबे की सीढ़ी ही दी। सुनहले कौए ने उसको भोजन भी ताँबे के बर्तन में ही कराया।

संस्कृत-व्याख्याः

सन्दर्भः–गद्यांशोऽयम् अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्याः 'स्वर्णकाकः' पाठात् उद्धृतः। पाठोऽयं श्रीपद्मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' इति कथासंग्रहात् सङ्कलितो वर्तते। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' से 'स्वर्णकाकः' पाठ से लिया गया है। यह पाठ श्री पद्मशास्त्री रचित 'विश्वकथाशतकम्' से संकलित है।)

प्रसङ्गः—वर्णितमत्र वर्तते यदेका लुब्धा स्त्री सूर्यातपे अक्षतान् निक्षिप्य स्वपुत्रीं तेषां रक्षार्थं नियुक्तवती। स्वर्णकाके च अक्षतान् खादिते तेषां मूल्यं ग्रहीतुम् अकथयत्। (इसमें वर्णन किया गया है कि एक लोभी स्त्री धूप में चावल रखकर अपनी बेटी को उनकी रखवाली के लिए नियुक्त करती है। स्वर्णकाक चावलों को खाता है और वह उनका मूल्य ग्रहण करने के लिए कहती है।)

व्याख्याः—तस्मिन् एव ग्रामे एका अन्या लोभान्विता वृद्धा स्त्री वसति स्म। तस्याः अपि एका दुहिता आसीत्। मत्सरेण सा वृद्धा तस्य हेमवायसस्य रहस्यम् अजानीत्। सा अपि सूर्यातपे अक्षतान् स्थिरीकृत्य स्वपुत्रीं तेषां रक्षार्थं नियुक्ताम् अकरोत्। तथैव हेमवायसः तण्डुलान् खादन् तामपि तत्रैव आगन्तुम् अकथयत् सा (बालिका) प्रातः तत्र प्रस्थानं कृत्वा काकस्य निन्दां कुर्वन्ती अवदत् यद् भो अधमकाक! अहमत्र उपस्थिता अस्मि। मम कृते अक्षतानां मूल्यं देहि। काकः अवदत् यत् अहं तुभ्यं सोपानम् अवतारयामि, कथय तावत् स्वर्णमयं, रूप्यमयं ताम्रमयं वा। गर्वयुक्ता सा बालिका प्रत्यवदत् यदहं स्वर्णमयेन सोपानेन आगमिष्यामि। परं स्वर्णकाकः तस्यै ताम्रसोपानमेव अददात्। स्वर्णकाकः तस्यै अशनमपि ताम्रपात्रे एव पर्यवेषयत्। (उसी गाँव में एक दूसरी लोभी बुढ़िया रहती थी। ईर्ष्या के कारण वह बुढ़िया स्वर्णकाक के रहस्य को जानती थी। उसने भी धूप में चावल रखकर अपनी बेटी को रखवाली के लिए नियुक्त कर दिया। उसी प्रकार सोने का कौवा चावलों को खाते हुए उसे भी आने के लिए कह गया। वह लड़की भी प्रातः वहाँ प्रस्थान करके कौवे की निन्दा करती हुई बोली—अरे नीच कौवे; मैं यहाँ उपस्थित हो गई हूँ। मेरे लिए चावलों का मूल्य दो। कौआ बोला कि मैं तेरे लिए सीढ़ी उतारता हूँ, बोलो तो सोने की चाँदी की अथवा ताँबे की? गर्वयुक्त उस लड़की ने उत्तर दिया कि मैं सोने की सीढ़ी से ही आऊँगी। लेकिन स्वर्णकाक ने उसके लिए ताँबे की सीढ़ी दी। स्वर्ण काक ने उसके लिए भोजन भी ताँबे की थाली में दिया।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) निर्धारित स्थानं प्राप्य लुब्धायाः वृद्धाया पुत्री काकं केन शब्देन समबोधयत्।
(निर्धारित स्थान पर पहुँच कर लोभी वृद्धा की बेटी ने कौवे को किस शब्द से संबोधित किया?)

(ख) सा कस्य रहस्यं न ज्ञातवती? (वह किसके रहस्य को नहीं जान सकी?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) बालिका स्वर्णकाकस्य रहस्यं कस्मात् न ज्ञातवती? (बालिका स्वर्णकाक के रहस्य को क्यों नहीं जान सकी?)

(ख) बालिका निर्भत्सयन्ती काकं किं प्रावोचत्? (बालिका ने निन्दा करते हुए कौवा को क्या कहा?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'पुत्री' इति पदस्य पर्यायवाचि पदं गद्यांशात् अन्विष्य लिखत।
('पुत्री' पद का पर्यायवाची पद गद्यांश से ढूँढ़ कर लिखिए।)

(ख) 'तस्मिन्नेव ग्रामे' एतयोः पदयोः किं विशेषणपदम्? ('तस्मिन्नेव ग्रामे' इनमें विशेषण पद कौनसा है?)

उत्तराणि—(1) (क) नीच काक! (नीच कौआ।)। (ख) स्वर्णकाकस्य। (सोने के कौवे का)।

(2) (क) ईर्ष्यया बालिका स्वर्णकाकस्य रहस्यं न ज्ञातवती।
(ईर्ष्या के कारण बालिका स्वर्णकाक के रहस्य को न जान सकी।)

(ख) सा प्रावोचत्—'भो नीचकाक! अहम् आगता मह्यं तण्डुल मूल्यं प्रदत्य।
(वह बोली- अरे नीच कौवे! मैं आ गई हूँ, मेरे चावलों का मूल्य दो।)

(3) (क) सुता (बेटी)। (ख) तस्मिन् (उसमें)।

6. *प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकेन कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः तत्पुरः समुत्क्षिप्ताः। लोभाविष्टा सा बृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती। गृहमागत्य सा तर्षिता यावद् मञ्जूषामुद्घाटयति तावत् तस्यां भीषणः कृष्णसर्पो विलोकितः। लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्। तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।*

शब्दार्थाः—प्रतिनिवृत्तिकाले = प्रत्यागमनस्य समये (वापस लौटते समय), स्वर्णकाकेन = हेमवायसेन (सोने के कौए द्वारा), कक्षाभ्यन्तरात् = कोष्ठस्य गर्भात् (कमरे के अन्दर से), तिस्रः = तीन, मञ्जूषाः = पेटिकाः (सन्दूकें/पेटियाँ), तत्पुरः = तस्याः अग्रे (उसके सामने), समुत्क्षिप्ताः = निक्षिप्ताः (रखी गईं), लोभाविष्टा = लोभवशीभूता (लोभ से घिरी), सा =

(उसने), बृहत्तमाम् = विशालतमां (सबसे बड़ी), मञ्जूषाम् = पेटिकां (सन्दूक/पेटी), गृहीतवती = ग्रहणम् अकरोत् (ग्रहण की/ली), गृहमागत्य = गेहम् आगत्य (घर आकर), सा = (उसने), हर्षिता = प्रसन्ना भवन्ती (प्रसन्न होती हुई), यावद् = यस्मिन्नेव क्षणे (जैसे ही), मञ्जूषामुद्घाटयति = पेटिकायाः भेदनम् अकरोत् (सन्दूक/पेटी को खोला), तावत् = तद्वत् एव (वैसे ही), तस्याम् = (उसमें), भीषणः = भयंकरः (भयंकर), कृष्णसर्पः = श्यामः भुजगः (काले साँप को), विलोकितः = अपश्यत् (देखा), लुब्धया बालिकया = लोभवशीभूतया बालिकया (लालची लड़की को), लोभस्य फलम् = परद्रव्याभिलाषस्य परिणामं (लोभ का फल), प्राप्तम् = (प्राप्त हो गया), तदनन्तरम् = तत्समयपश्चात् (उसके पश्चात्), सा = (उसने), लोभम् = परद्रव्याभिलाषां (लोभ को/लालच को), पर्यत्यजत् = अत्यजत् (छोड़ दिया)।

हिन्दी-अनुवादः

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' के 'स्वर्णकाकः' पाठ से उद्धृत है। यह पाठ श्रीपद्मशास्त्री द्वारा रचित 'विश्वकथाशतकम्' कथा-संग्रह से संकलित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश में लड़की द्वारा कौए से सबसे बड़ी सन्दूक लेने, लोभ का फल प्राप्त करने तथा लालच का त्याग करने का वर्णन है।

हिन्दी-अनुवाद—(घर) वापस लौटने के समय सुनहले कौए ने कमरे के अन्दर से (लाकर) तीन पेटियाँ बालिका के सामने रखीं। लोभ से घिरी लड़की ने सबसे बड़ी सन्दूक ग्रहण की। घर आकर उसने प्रसन्न होते हुए जैसे ही संदूक को खोला वैसे ही उसमें भयंकर काले साँप को देखा। इस प्रकार उस लड़की को लोभ का फल प्राप्त हो गया। उसके पश्चात् उसने लोभ छोड़ दिया।

संस्कृत-व्याख्याः

सन्दर्भः—प्रस्तुतगद्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकात् शेमुष्याः 'स्वर्णकाकः' पाठात् उद्धृतः। पाठोऽयं श्रीपद्मशास्त्रिणा विरचितात् 'विश्वकथाशतकम्' इति कथासंग्रहात् सङ्कलितो वर्तते। (प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषी के 'स्वर्णकाकः' पाठ से लिया गया है। यह पाठ श्री पदम्शास्त्री रचित 'विश्वकथाशतकम्' कथा संग्रह से संकलित है।)

प्रसङ्गः—गद्यांशोऽयं वर्णयति यद् लुब्धा बालिका लोभस्य फलं प्राप्तम् अकरोत्। (यह गद्यांश वर्णित करता है कि लोभी बालिका लोभ का फल पाती है।)

व्याख्याः—प्रत्यागमनस्य समये स्वर्णकाकः कोष्ठस्य गर्भात् तिस्रः पेटिकाः बालिकायाः समक्षं निक्षिप्तवान्। लुब्धा बालिका विशालतमां पेटिकाम् अग्रहीत्। गेहम् आगता प्रसन्ना भवन्ती सा यावदेव पेटिकाम् उद्घाटयत् तावदेव अन्तः स्थितं भयङ्करम् कृष्णसर्पम् अपश्यत्। एवं सा बालिका लोभस्य फलं प्राप्तम् अकरोत्। तत्पश्चात् सा लोभम् अत्यजत्। (लौटते समय स्वर्ण काक ने कमरे के अन्दर से लाकर तीन पेटियाँ बालिका के सामने रख दीं। लोभी लड़की ने सबसे बड़ी पेटी ली। घर आई हुई उसने जब पेटी को खोला तो उसके अन्दर एक भयंकर काला नाग देखा। इस प्रकार उस बालिका ने लोभ का फल प्राप्त किया। इसके बाद उसने लोभ त्याग दिया।)

अवबोधन कार्यम्

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत— (एक शब्द में उत्तर दीजिए—)

(क) लोभाविष्टा कन्या कीदृशीं मञ्जूषां गृहीतवती? (लोभी कन्या ने कैसी मञ्जूषा ग्रहण की?)

(ख) लुब्धया बालिकया कस्य फलं प्राप्तम्? (लोभी बालिका ने किसका फल प्राप्त किया?)

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत— (पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) मञ्जूषाम् उद्घाट्य सा किम् अपश्यत्? (मञ्जूषा को खोलकर उसने क्या देखा?)

(ख) काकः तिस्रः मञ्जूषा कदा आनयत्? (कौआ तीन मञ्जूषाएँ कब लाया?)

प्रश्न 3. यथानिर्देशम् उत्तरत—(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए—)

(क) 'तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्' अत्र सा इति सर्वनामपदं कस्य स्थाने प्रयुक्तम्?
(यहाँ 'सा' सर्वनाम पद किस स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।)

(ख) 'कृष्णसर्पो' अत्र विशेष्य पदं किम्? ('कृष्णसर्पो' यहाँ विशेष्य पद क्या है?)

उत्तराणि—(1) (क) वृहत्तमाम्। (सबसे बड़ी को)। (ख) लोभस्य (लोभ का)।

(2) (क) मञ्जूषाम् उद्घाट्य सा कृष्ण सर्पमपश्यत्। (मंजूषा को खोलकर उसने काला साँप देखा।)
(ख) प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकः तिस्रः मञ्जूषाः आनयत्। (लौटते समय स्वर्णकाक तीन पेटियाँ लाया।)
(3) (क) लुब्धा बालिकाया। (लोभी बालिका के स्थान पर।) (ख) 'सर्पः' अत्र विशेष्य पदम्।

पाठ्य–पुस्तकस्य प्रश्नोत्तराणि

1. (अ) एकपदेन उत्तरं लिखत–(एक शब्द में उत्तर लिखिए–)

(क) माता काम् आदिशत्? (माता ने किसको आदेश दिया?)

उत्तरम्–पुत्रीम् (बेटी को)।

(ख) स्वर्ण-काकः कान् अखादत्? (सोने का कौवा किन्हें खा गया?)

उत्तरम्–तण्डुलान् (चावलों को)।

(ग) प्रासादः कीदृशः वर्तते? (महल कैसा है?)

उत्तरम्–स्वर्णमयः (सोने का)।

(घ) गृहमागत्य तया का समुद्घाटिता? (घर आकर उसने क्या खोली?)

उत्तरम्–मञ्जूषा (पेटी)।

(ङ) लोभाविष्टा बालिका कीदृशीं मञ्जूषां नयति? (लोभी लड़की कैसी मंजूषा को ले जाती है?)

उत्तरम्–वृहत्तमाम् (सबसे बड़ी को)।

(आ) अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–)

(क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत् ? (निर्धन वृद्धा की पुत्री कैसी थी?)

उत्तरम्–निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। (निर्धन वृद्धा की पुत्री विनम्र और मनोहर थी।)

(ख) बालिकया पूर्वं कीदृशः काकः न दृष्टमः आसीत्? (बालिका के द्वारा पहले कैसा कौआ नहीं देखा गया था?)

उत्तरम्–बालिकया पूर्वं स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकः न दृष्टः आसीत्।
(बालिका के द्वारा पहले सोने के पंखों वाला, चाँदी की चोंच वाला सुनहला कौआ नहीं देखा गया था।)

(ग) निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां कानि अपश्यत्? (निर्धना की पुत्री ने मंजूषा में किन्हें देखा?)

उत्तरम्–निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि अपश्यत्। (निर्धन की पुत्री ने मंजूषा में महँगे हीरे देखे।)

(घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता? (बालिका क्या देखकर आश्चर्यचकित हो गई?)

उत्तरम्–बालिका वृक्षस्योपरि स्वर्णमयं प्रासादं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता।
(बालिका वृक्ष के ऊपर सोने का महल देखकर आश्चर्यचकित हो गई।)

(ङ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत् कीदृशं च प्राप्नोत्?
(घमण्डी बालिका ने कैसी सीढ़ी माँगी और कैसी प्राप्त की?)

उत्तरम्–गर्विता बालिका स्वर्णमयसोपानम् अयाचत् ताम्रमयं च प्राप्नोत्।
(घमण्डी बालिका ने सोने की सीढ़ी माँगी और ताँबे की प्राप्त की।)

2. (क) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत–

(निम्नलिखित शब्दों के विलोमपद पाठ से चुनकर लिखिए–)

(i) पश्चात्	....	(ii) हसितुम्	....
(iii) अधः	....	(iv) श्वेतः	....
(v) सूर्यास्तः	....	(vi) सुप्तः	....

उत्तरम्–

	शब्दः	विलोमपदम्		शब्दः	विलोमपदम्
(i)	पश्चात्	पूर्वम्	(iv)	हसितुम्	रोदितुम्
(ii)	अधः	उपरि	(v)	श्वेतः	कृष्णः
(iii)	सूर्यास्तः	सूर्योदयः	(vi)	सुप्तः	प्रबुद्धः

(ख) सन्धिं कुरुत (संधि करिए–)–

(i)	नि	+	अवसत्	....		(ii)	सूर्य	+	उदयः	....
(iii)	वृक्षस्य	+	उपरि	....		(iv)	हि	+	अकारयत्	....
(v)	च	+	एकाकिनी	....		(vi)	इति	+	उक्त्वा	....
(vii)	प्रति	+	अवदत्	....		(viii)	प्र	+	उक्तम्	....
(ix)	अत्र	+	एव	....		(x)	तत्र	+	उपस्थिता	....
(xi)	यथा	+	इच्छम्	....						

उत्तरम्–(i) न्यवसत्, (ii) सूर्योदयः, (iii) वृक्षस्योपरि, (iv) ह्यकारयत्, (v) चैकाकिनी, (vi) इत्युक्त्वा, (vii) प्रत्यवदत्, (viii) प्रोक्तम्, (ix) अत्रैव, (x) तत्रोपस्थिता, (xi) यथेच्छम्।

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(मोटे छपे शब्दों को आधार बनाकर प्रश्न-निर्माण कीजिए–)

(क) ग्रामे **निर्धना स्त्री** अवसत्। (गाँव में निर्धन स्त्री रहती थी।)

(ख) **स्वर्णकाकं** निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्। (सुनहले कौए को रोकती हुई बालिका ने प्रार्थना की।)

(ग) **सूर्योदयात्** पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता। (सूर्योदय से पूर्व ही बालिका वहाँ उपस्थित हो गई।)

(घ) बालिका **निर्धनमातुः** दुहिता आसीत्। (बालिका गरीब माता की पुत्री थी।)

(ङ) लुब्धा वृद्धा **स्वर्णकाकस्य** रहस्यमभिज्ञातवती। (लोभी वृद्धा सुनहले कौए के रहस्य को जान गई।)

प्रश्नः–(क) ग्रामे का अवसत्? (गाँव में कौन रहती थी?)

(ख) कं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्? (किसे रोकती हुई बालिका ने प्रार्थना की?)

(ग) कस्मात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता? (किससे पहले ही बालिका वहाँ उपस्थित हो गई?)

(घ) बालिका कस्याः दुहिता आसीत्? (बालिका किसकी पुत्री थी?)

(ङ) लुब्धा वृद्धा कस्य रहस्यमभिज्ञातवती? (लोभी वृद्धा किसके रहस्य को जान गई?)

4. प्रकृति-प्रत्यय-संयोगं कुरुत–(प्रकृति-प्रत्यय का संयोग कीजिए)–

(पाठात् चित्वा वा लिखत) अथवा पाठ में से छाँटकर लिखिए।

(क) वि + लोक् + ल्यप्– .... (ख) नि + क्षिप् + ल्यप् – ....

(ग) आ + गम् + ल्यप् – .... (घ) दृश् + क्त्वा – ....

(ङ) शी + क्त्वा – .... (च) लघु + तमप् – ....

उत्तर–(क) विलोक्य, (ख) निक्षिप्य, (ग) आगम्य/आगत्य (घ) दृष्ट्वा, (ङ) शयित्वा, (च) लघुतमम्।

5. प्रकृतिप्रत्यय-विभागं कुरुत–(प्रकृति-प्रत्यय को अलग कीजिए)–

(क) रोदितुम् – .... (ख) दृष्ट्वा – ....

(ग) विलोक्य – .... (घ) निक्षिप्य – ....

(ङ) आगत्य – .... (च) शयित्वा – ....

(छ) लघुतमम् – ....

उत्तर– (क) रुद् + तुमुन् (ख) दृश् + क्त्वा

(ग) वि	+	लोक् + ल्यप्	(घ) नि	+	क्षिप् + ल्यप्
(ङ) आ	+	गम् + ल्यप्	(च) शी	+	क्त्वा
(छ) लघु	+	तमप्			

6. अधोलिखितानि कथनानि कः/का, कं/ काम् च कथयति—

(निम्नलिखित कथनों को कौन किससे कहता है—)

कथनानि	कः/का	कं/काम्
(क) पूर्वं प्रातराशः क्रियाताम्	....	....
(ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष	....	....
(ग) तण्डुलान् मा भक्षय	....	....
(घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि	....	....
(ङ) भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ	....	....

उत्तर—

कः/का	कं/काम्
(क) स्वर्णकाकः (सुनहला कौआ)	बालिकाम् (बालिका से)
(ख) निर्धना वृद्धा (निर्धन वृद्धा)	पुत्रीम् (पुत्री से)
(ग) निर्धना बालिका (निर्धन बालिका)	स्वर्णकाकम् (सुनहले कौए से)
(घ) स्वर्णकाकः (सुनहला कौआ)	निर्धनां बालिकाम् (निर्धन बालिका से)
(ङ) गर्विता बालिका (घमण्डी बालिका)	स्वर्णकाकम् (सुनहले कौए से)

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु पञ्चमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत—

(उदाहरणानुसार कोष्ठक में दिये गये पदों में पंचमी विभक्ति का प्रयोग कर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए—)

यथा—मूषकः बिलाद् बहिः निर्गच्छति। (बिल)

(क) जनः .... बहिः आगच्छति।	(ग्राम)	(ख) नद्यः .... निस्सरन्ति।	(पर्वत)
(ग) .... पत्राणि पतन्ति।	(वृक्ष)	(घ) बालकः .... विभेति।	(सिंह)
(ङ) ईश्वरः .... त्रायते।	(क्लेश)	(च) प्रभुः भक्तं .... निवारयति।	(पाप)

उत्तर—(क) ग्रामात्, (ख) पर्वतेभ्यः, (ग) वृक्षात्, (घ) सिंहात्, (ङ) क्लेशात्, (च) पापात्।

अन्यमहत्त्वपूर्णप्रश्नोत्तराणि

प्रश्नः 1. ग्रामे का न्यवसत्? (गाँव में कौन रहती थी?)

उत्तरम्—ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। (गाँव में एक गरीब वृद्धा स्त्री रहती थी।)

प्रश्नः 2. माता किम् अकरोत्? (माता ने क्या किया?)

उत्तरम्—माता स्थाल्यां तण्डुलान् निक्षिप्य पुत्रीं तद्रक्षणाय आदिदेश।

(माता ने थाली में चावलों को रखकर पुत्री को उनकी रक्षा करने का आदेश दिया।)

प्रश्नः 3. किञ्चित् कालादनन्तरं किम् अभवत्? (कुछ समय पश्चात् क्या हुआ?)

उत्तरम्—किञ्चित् कालादनन्तरम् एकः विचित्रः काकः समुड्डीय तामुपजगाम।

(कुछ समय पश्चात् एक विचित्र कौआ उड़कर उसके पास आया।)

प्रश्नः 4. बालिकया कीदृशः काकः पूर्वं न दृष्टः? (बालिका ने कैसा कौआ पहले नहीं देखा था?)

उत्तरम्—बालिकया स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकः पूर्वं न दृष्टः।

(बालिका ने सोने के पंखों वाला चाँदी की चोंच वाला सुनहला कौआ पहले नहीं देखा था।)

प्रश्न: 5. बालिका काकं किं प्रार्थयत्? (बालिका ने कौए से क्या प्रार्थना की?)

उत्तरम्—बालिका काकं प्रार्थयत्—तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते।

(बालिका ने कौए से प्रार्थना की—चावलों को मत खाओ। मेरी माता बहुत गरीब है।)

प्रश्न: 6. किं विलोक्य बालिका रोदितुम् आरब्धा? (क्या देखकर बालिका ने रोना प्रारम्भ कर दिया?)

उत्तरम्—काकं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुम् आरब्धा।

(कौए को चावलों को खाते हुए और हँसते हुए देखकर बालिका ने रोना आरम्भ कर दिया।)

प्रश्न: 7. बालिका (कन्या) ग्रामात् बहिः कदा उपस्थिता? (बालिका गाँव से बाहर कब उपस्थित हो गई?)

उत्तरम्—बालिका सूर्योदयात्पूर्वमेव ग्रामात् बहिः उपस्थिता। (बालिका सूर्योदय से पूर्व ही गाँव से बाहर उपस्थित हो गई।)

प्रश्न: 8. बालिकां वृक्षस्य अधः दृष्ट्वा काकेन किं कथितम्?

(वृक्ष के नीचे बालिका को देखकर कौए ने क्या कहा?)

उत्तरम्—काकेन कथितम्—हं हो बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयमुत ताम्रमयं वा। (कौए ने कहा—अरे बालिके तुम आ गई, ठहरो, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूँ, तो कहो सोने की या चाँदी की अथवा ताँबे की।)

प्रश्न: 9. सोपानविषये कन्या काकं किं प्रावोचत्? (सीढ़ी के विषय में बालिका ने कौए से क्या कहा?)

उत्तरम्—कन्या काकं प्रावोचत्—अहं निर्धनमातुर्दुहिता अस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि।

(बालिका ने कौए से कहा—मैं निर्धन माता की पुत्री हूँ। ताँबे की सीढ़ी से ही आऊँगी।)

प्रश्न: 10. श्रान्तां कन्यां विलोक्य काकः किं प्राह? (कन्या को थकी हुई देखकर कौए ने क्या कहा?)

उत्तरम्—कन्यां श्रान्तां विलोक्य काकः प्राह—पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम्।

(बालिका को थकी हुई देखकर कौआ बोला—पहले थोड़ा-सा सुबह का नाश्ता कर लो।)

प्रश्न: 11. बालिका स्थाल्याविषये किं व्याजहार? (बालिका ने थाली के विषय में क्या कहा?)

उत्तरम्—स्थाल्याविषये बालिका व्याजहार—ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।

(थाली के विषय में बालिका ने कहा—मैं गरीब हूँ, (इसलिए) ताँबे की थाली में ही भोजन करूँगी।)

प्रश्न: 12. प्रातराशकाले कन्या कदा आश्चर्यचकिता जाता?

(नाश्ते के समय बालिका कब आश्चर्यचकित हो गई?)

उत्तरम्—कन्या तदा आश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं परिवेषितम्।

(बालिका तब आश्चर्यचकित हो गई जब सुनहले कौए ने सोने की थाली में भोजन परोसा।)

प्रश्न: 13. अन्ते काकः किं ब्रूते? (अन्त में कौए ने क्या कहा?)

उत्तरम्—अन्ते काकः ब्रूते—बालिके! अहम् इच्छामि यत् त्वं सर्वदा अत्रैव तिष्ठ परं तव माता एकाकिनी वर्तते।

(अन्त में कौए ने कहा—बालिका! मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा यहीं पर ठहरो लेकिन तुम्हारी माँ अकेली है।)

प्रश्न: 14. काकः कक्षाभ्यन्तरात् किम् आनयत्? (कौआ कमरे के अन्दर से क्या लाया?)

उत्तरम्—काकः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः आनयत्। (कौआ कमरे के अन्दर से तीन सन्दूकें लाया।)

प्रश्न: 15. मञ्जूषाः निस्सार्य काकः बालिकां किम् अवदत्? (सन्दूकें निकालकर कौए ने बालिका से क्या कहा?)

उत्तरम्—काकः बालिकाम् अवदत्—बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्।

(कौआ बालिका से बोला—बालिका! इच्छानुसार एक सन्दूक ग्रहण करो।)

प्रश्न: 16. बालिका कां मञ्जूषां गृहीतवती? (बालिका ने कौनसा सन्दूक लिया?)

उत्तरम्—बालिका लघुतमां मञ्जूषां गृहीतवती। (बालिका ने सबसे छोटा सन्दूक लिया।)

प्रश्न: 17. मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया किं कथितम्? (सन्दूक को लेकर बालिका ने क्या कहा?)

उत्तरम्—मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितम्—इयत् एव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।

(सन्दूक लेकर बालिका ने कहा—इतना ही मेरे चावलों का मूल्य है।)

प्रश्न: 18. मञ्जूषां समुद्घाट्य बालिका तस्यां किम् अपश्यत्?

(सन्दूक को खोलकर बालिका ने उसमें क्या देखा?)

उत्तरम्—मञ्जूषां समुद्घाट्य बालिका तस्यां महार्हाणि हीरकाणि अपश्यत्।
(सन्दूक को खोलकर बालिका ने उसमें बहुमूल्य हीरों को देखा।)
प्रश्नः 19. अपरा वृद्धा कस्य रहस्यम् अभिज्ञातवती? (दूसरी वृद्धा किसके रहस्य को जान गई?)
उत्तरम्—अपरा वृद्धा स्वर्णकाकस्य रहस्यम् अभिज्ञातवती। (दूसरी वृद्धा सुनहले कौए के रहस्य को जान गई।)
प्रश्नः 20. काकः निर्धनायै बालिकायै किं दातुम् अकथयत्?
(कौए ने निर्धन बालिका के लिए क्या देने को कहा?)
उत्तरम्—काकः निर्धनायै बालिकायै तण्डुलमूल्यं दातुम् अकथयत्।
(कौए ने निर्धन बालिका के लिए चावलों का मूल्य देने को कहा।)
प्रश्नः 21. निर्धना कन्या कीदृशं सोपानं अवतारयितुम् अकथयत्? (गरीब कन्या ने कैसी सीढ़ी उतारने को कहा?)
उत्तरम्—निर्धना कन्या ताम्रसोपानम् अवतारयितुम् अकथयत्। (गरीब कन्या ने ताँबे की सीढ़ी उतारने को कहा।)
प्रश्नः 22. निर्धनां बालिकां काकः कति मञ्जूषाः ग्रहीतुम् अकथयत्?
(कौए ने निर्धन बालिका से कितनी सन्दूकें लेने को कहा?)
उत्तरम्—काकः निर्धनां बालिकाम् एकां मञ्जूषां ग्रहीतुम् अकथयत्।
(कौए ने निर्धन बालिका से एक सन्दूक लेने को कहा।)
प्रश्नः 23. लुब्धया बालिकया का मञ्जूषा गृहीता? (लोभी बालिका ने कौन-सी सन्दूक ग्रहण की?)
उत्तरम्—लुब्धया बालिकया बृहत्तमा मञ्जूषा गृहीता। (लोभी बालिका ने सबसे बड़ी सन्दूक ग्रहण की।)

। रेखांकित पदान्यधिकृत्य प्रश्न-निर्माणं कुरुत—(रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण करिए—)

प्रश्नः 1. स्वर्णकाकः इति कथायां <u>लोभस्य</u> परिणामो वर्णितः। (स्वर्णकाकः कहानी में लोभ का परिणाम वर्णित है।)
उत्तरम्—स्वर्णकाकः इति कथायां कस्य परिणामो वर्णितः? (इस कहानी में किसका परिणाम वर्णित है?)
प्रश्नः 2. दुहिता <u>विनम्रा मनोहरा</u> चासीत्। (बेटी विनम्र और मनोहर थी।)
उत्तरम्—दुहिता कीदृशी आसीत्? (बेटी कैसी थी?)
प्रश्नः 3. स्थाल्यां <u>तण्डुलान्</u> निक्षिप्य पुत्रीम् आदिशत्। (थाली में चावल रखकर बेटी को आदेश दिया।)
उत्तरम्—स्थाल्यां कान् निक्षिप्य पुत्रीम् आदिशत्? (थाली में किन्हें रखकर बेटी को आदेश दिया।)
प्रश्नः 4. <u>बालिका</u> रोदितुमारब्धा। (बालिका ने रोना आरम्भ किया।)
उत्तरम्—का रोदितुमारब्धा? (किसने रोना आरम्भ किया?)
प्रश्नः 5. <u>सूर्योदयात्पूर्वमेव</u> सा तत्रोपस्थिता। (सूर्योदय से पूर्व ही वह वहाँ उपस्थित हो गई।)
उत्तरम्—सा तत्र कदा उपस्थिता? (वह वहाँ कब उपस्थित हुई?)
प्रश्नः 6. सा <u>स्वर्णसोपानेन</u> स्वर्णभवनम् आरोहत। (वह सोने की सीढ़ी से स्वर्ण-भवन पर चढ़ी।)
उत्तरम्—सा केन स्वर्णभवनम् आरोहत? (वह किससे सोने के भवन पर चढ़ी?)
प्रश्नः 7. तदा सा <u>आश्चर्यचकिता</u> सञ्जाता? (तब वह आश्चर्यचकित हो गई।)
उत्तरम्—तदा सा कीदृशी सञ्जाता? (तब वह कैसी हो गई?)
प्रश्नः 8. स्वर्णकाकेन <u>स्वर्णस्थाल्यां</u> भोजनं परिवेषितम्। (स्वर्ण काक द्वारा सोने की थाली में भोजन परोसा गया।)
उत्तरम्—स्वर्णकाकेन कस्यां भोजनं परिवेषितम्? (स्वर्ण काक ने किसमें भोजन परोसा?)
प्रश्नः 9. काकः <u>कक्षाभ्यन्तरात्</u> तिस्रः मञ्जूषा निस्सार्य अददात्। (कौए ने कमरे के अन्दर से तीन पेटी निकालकर दीं।)
उत्तरम्—काकः कुतः तिस्रः मञ्जूषा निस्सार्य अददात्। (कौए ने कहाँ से तीन पेटी निकालकर दीं।)
प्रश्नः 10. <u>लुब्धया बालिकया</u> लोभस्य फलं प्राप्तम्? (लोभी बालिका द्वारा लोभ का फल प्राप्त किया गया।)
उत्तरम्—कया लोभस्य फलं प्राप्तम्? (किसके द्वारा लोभ का फल प्राप्त किया गया?)

कथाक्रम-संयोजनम्

अधोलिखितवाक्यानि पठित्वा कथाक्रमसंयोजनं कुरुत—
(निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर कथा-क्रम-संयोजन कीजिए)—

(1) ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती। (2) तस्मिन्नेव ग्रामे एकाऽपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। (3) लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितमियदेव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्। (4) काक: प्राह–पूर्वं लघुप्रातराश: क्रियताम्। (5) भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। (6) सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। (7) नैतादृश: स्वर्णपक्षो रजतचञ्चु: स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्ट:। (8) तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्।

उत्तरम्–(1) तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। (2) नैतादृश: स्वर्णपक्षो रजतचञ्चु: स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्ट:। (3) सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। (4) भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। (5) काक: प्राह–पूर्वं लघुप्रातराश: क्रियताम्। (6) लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितमियदेव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्। (7) तस्मिन्नेव ग्रामे एकाऽपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। (8) ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।

भाषिक–विस्तार

1. 'किसी भी काम को करके' इस अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा– पठित्वा – पठ् + क्त्वा = पढ़कर
गत्वा – गम् + क्त्वा = जाकर
खादित्वा – खाद् + क्त्वा = खाकर

इसी अर्थ में अगर धातु (क्रिया) से पहले उपसर्ग होता है तो ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। धातु से पूर्व उपसर्ग होने की स्थिति में कभी भी 'क्त्वा' प्रत्यय नहीं हो सकता और उपसर्ग न होने की स्थिति में कभी भी ल्यप् प्रत्यय नहीं हो सकता है।

यथा– उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य
सम् + पूज् + ल्यप् = सम्पूज्य
वि + लोक् + ल्यप् = विलोक्य
आ + दा + ल्यप् = आदाय
निर् + गम् + ल्यप् = निर्गत्य

2. प्रश्नवाचक शब्दों को अनिश्चयवाचक बनाने के लिए चित् और चन निपातों का प्रयोग किया जाता है। ये निपात जब सर्वनाम पदों के साथ लगते हैं तो सर्वनाम पद होते हैं और जब अव्यय पदों के साथ प्रयुक्त होते हैं तो अव्यय होते हैं।

यथा–क: = कौन

क: + चन = कश्चन = कोई — क: + चित् = कश्चित् = कोई
के + चन = केचन = कोई (बहुवचन में) — के + चित् = केचित् (बहुवचन में)
का + चन = काचन = कोई (स्त्री) — का + चित् = काचित् (कोई स्त्री)
का: + चन = काश्चन = कुछ स्त्रियाँ (बहुवचन में) — का:+ चित् = काश्चित् (कुछ स्त्रियाँ) (बहुवचन में)

'किम्' शब्द के सभी वचनों, लिंगों व सभी विभक्तियों में 'चित्' और 'चन' का प्रयोग किया जा सकता है और उसे अनिश्चयवाचक बनाया जा सकता है।

जैसे– (i) किञ्चित्–प्रथमा में
(ii) केनचित्–तृतीया में
(iii) केषाञ्चित् (केषाम् + चित्)–षष्ठी में
(iv) कस्मिंश्चित्–सप्तमी में
(v) कस्याञ्चित्–सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग में)

इस तरह 'चित्' के स्थान पर 'चन' का प्रयोग होता है। 'चित्' और 'चन' जब अव्यय पदों में लग जाते हैं तो वे अव्यय हो जाते हैं। जैसे– क्वचित्–क्वचन कदाचित्–कदाचन

3. संस्कृत में एक से चतुर् (चार) तक संख्यावाची शब्द पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में अलग-अलग रूपों में होते हैं पर पञ्च (पाँच) से उनका रूप सभी लिङ्गों में एक-सा होता है।

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एक:	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि

तीनों लिङ्गों में इनके रूप इस प्रकार चलते हैं—

(पुल्लिङ्ग में)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु

(स्त्रीलिङ्ग में)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः
चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
पञ्चमी	गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
षष्ठी	गच्छन्त्याः	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीनाम्
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीषु

(नपुंसकलिङ्ग में)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति

शेष पुल्लिङ्गवत् (तृतीया से सप्तमी तक पुल्लिङ्ग के समान)

4. 'तरप्' और 'तमप्' प्रत्ययों में 'तर' और 'तम' शेष बचता है—इनके रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं। पुल्लिङ्ग में राम के समान, स्त्रीलिङ्ग में रमा के समान तथा नपुंसक लिङ्ग में फल के समान।

यथा—बलवत् + तरप् = बलवत्तरः लघु + तमप् = लघुतमः

ये तुलनावाची प्रत्यय हैं। इनके उदाहरण देखें—

	पुल्लिङ्ग	पुल्लिङ्ग
लघु	लघुतरः	लघुतमः
महत	महत्तरः	महत्तमः
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतरः	श्रेष्ठतमः
मधुर	मधुरतरः	मधुरतमः
गुरु	गुरुतरः	गुरुतमः
तीव्र	तीव्रतरः	तीव्रतमः
प्रिय	प्रियतरः	प्रियतमः